हिन्दी मासिक
सच्चा राही
सामाजिक एवं साहित्यिक
लखनऊ

मार्च, 2015 वर्ष 14 अंक 01

सम्पादक
डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी
सहायक
मु0 गुफ़रान नदवी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही
पोस्ट बॉक्स नं0 93
नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग,
लखनऊ – 226007
फोन : 0522–2740406
फैक्स : 0522–2741221
E-mail : nadwa@sancharnet.in
nadwa@bsnl.in

सहयोग राशि

एक प्रति	₹ 15/-
वार्षिक	₹ 150/-
विशेष वार्षिक	₹ 500/-
विदेशों में (वार्षिक) 30 यु.एस. डॉलर	

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें
"सच्चा राही"
पता
पोस्ट बॉक्स नं0 93
नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग
लखनऊ–226007

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रेस से मुद्रित एवं दफ्तर मजलिसे सहाफ़त व नशरियात नदवतुल उलमा, लखनऊ से प्रकाशित।

मुहासबा

सोने से पहले हर शब अपना मुहासबा हो
अपने दिमाग़ का यु दिल से मुकालमा हो
पढ़ ली हैं ठीक से क्या तूने नमाज़ें पाँचों
बच्चों को भी सिखाई पढ़नी नमाज़ें पाँचों
ख़िदमत किसी कि की है, अल्लाह की रिज़ा को
कुछ ख़र्च भी किया है, अल्लाह की रिज़ा को
भूखे को है खिलाया, अल्लाह की रिज़ा को
प्यासे को है पिलाया, अल्लाह की रिज़ा को
प्यारे नबी पे भेजे कितने दुरूद तूने
असहाब पे भी भेजे क्या हैं सलाम तूने
हर शब मुहासबा यह जारी अगर रहेगा
कामों में नेकियों के पूरी मदद करेगा।

आपके पते के साथ जो खरीदारी नम्बर है अगर उसके नीचे लाल या काली लाइन हैं तो समझें कि आपका सालाना चन्दा खत्म हो चुका है। अतः आप जल्द ही अपना चन्दा भेजने का कष्ट करें। और मनीआर्डर कूपन पर अपना खरीदारी नम्बर अवश्य लिखें। अगर आपका फोन या मोबाइल हो तो उसका नम्बर भी लिखें।

Desining & Editing by : Qamaruzzama- +91 94522 95052, +91 7275527805

विषय एक दृष्टि में

कुर्आन की शिक्षा	मौलाना शब्बीर अहमद उस्मानी	3
प्यारे नबी की प्यारी बातें	अमतुल्लाह तस्नीम	4
मानव मस्तिष्क	डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी	5
जगनायक	हज़रत मौ0 सै0 मु0 राबे हसनी नदवी	9
हिन्दुस्तानी मुसलमान एक दृष्टि में	हज़रत मौ0 अली मियाँ नदवी रह0	15
आपके प्रश्नों के उत्तर	मुफ़्ती ज़फ़र आलम नदवी	18
वक्त का सबसे बड़ा	मौलाना सय्यद मु0 हमजा हसनी नदवी	23
स्वालेह मुआशरे की तशकील	मौलाना वाजेह रशीद नदवी	24
एलाने मिलकियत व	इदारा	29
सच्चा राही चौदहवें वर्ष में	इदारा	30
नशा एक सामाजिक	अवधेश कुमार पाण्डे	33
पैरो बना के उनका (पद्य)	इदारा	36
उर्दू सीखिए	इदारा	39
अंतर्राष्ट्रीय समाचार	डॉ0 मुईद अशरफ नदवी	40

क़ुर्आन की शिक्षा

—मौलाना शब्बीर अहमद उस्मानी

सूर-ए-बकर:

अनुवाद- और याद रखो जब इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने कहा ऐ मेरे परवरदिगार मुझ को दिखला दे कि तू मुर्दे को क्यों कर ज़िन्दा करेगा, फरमाया क्या तुझे यकीन नहीं, कहा क्यों नहीं लेकिन इस वास्ते चाहता हूं कि मेरे दिल को तस्कीन हो जाये[1], फरमाया तू चार उड़ने वाले जानवर पकड़ ले, फिर उनको अपने साथ मानूस कर ले फिर उन के बदन का एक एक टुकड़ा हर पहाड़ पर रख दे, फिर उनको बुला वह तेरे पास दौड़ते चले आवेंगे[2], और जान ले कि बेशक अल्लाह ज़बरदस्त हिकमत वाला है[3](260), मिसाल उन लोगों की जो खर्च करते हैं अपने माल अल्लाह की राह में ऐसी है कि जैसे एक दाना उससे उगे सात बालियां, हर बाली में सौ सौ दाने और अल्लाह जिसके वास्ते चाहे बढ़ाता है और अल्लाह बे निहायत बख्शिश करने वाला है सब कुछ जानने वाला है[4](260)।

तफ़्सीर (व्याख्या):-

1. खुलासा यह हुआ कि हज़रत इब्राहीम अलै0 को यक़ीन पूरा था सिर्फ अैनुल यकीन (किसी चीज़ को अपनी आंख से देख कर यकीन करना) के तलबगार थे जो मुशाहिदे पर मौकूफ है।

2. हज़रत इब्राहीम अलै0 अल्लाह के हुक्म के मुताबिक चार जानवर लाये एक मोर, एक मुर्ग, एक कव्वा, एक कबूतर और चारों को अपने साथ हिलाया व मानूस किया, ताकि पहचान रहे और बुलाने से आने लगें, फिर चारों को जब्ह किया, फिर एक पहाड़ पर चारों के सर रखे, एक पर पर रखे, एक पर सब के धड़ रखे, एक पर पांव रखे, पहले बीच में खड़े हो कर एक को पुकारा उस का सर उठ कर हवा में खड़ा हुआ फिर धड़ मिला फिर पर लगे फिर पांव, वह दौड़ता चला आया फिर इसी तरह चारों आ गये।

3. यहां दो आशंकायें पैदा होने का पूरा संदेह है (1) बेजान जिस्म का अलग अलग टुकड़ों का ज़िन्दा होना क़ाबिले इंकार (2) कि वह परिंदे हों और चार भी हों और चार भी फुलां फुलां हों और इस तरह उनके जिस्म के टुकड़े अलग करके रखा जाये फिर उनको बुलाया जाये तो वह ज़िन्दा हो कर दौड़ते हुए चले आयेंगे इसका कोई दखल और इन शर्तों का कोई लाभ मालूम नहीं होता इसलिए पहले संदेह के जवाब में "अज़ीज़ुन" ज़बरदस्त, और दूसरे के जवाब में "हकीमुन" बड़ी हिकमत वाला, फरमा कर दोनों संदेहों का क़ला कमा (विध्वंस) फरमा दिया, यानी इसको खूब समझ लो

शेष पृष्ठ .....17.... पर

प्यारे नबी की प्यारी बातें

—अमतुल्लाह तस्नीम

शहीद का घर-

हज़रत समुरह रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया रात को दो लोग मेरे पास आये (यानी ख्वाब में) और वह मुझे एक पेड़ पर चढ़ा ले गये और फिर एक घर में दाखिल किया, वह घर इतना बेहतर था कि उस से बेहतर मैंने कभी नहीं देखा, फिर उन दोनों ने कहा यह शहीदों का घर है।

(बुखारी)

हजरत अनस रज़ि0 से रिवायत है कि उम्मे रबीअ़ बिन्तुलबरा जो हारिसा बिन सुराक़ा की माँ थी, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की खिदमत में आयीं और अर्ज किया या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मेरा बेटा हारिसा बद्र की लड़ाई में मारा गया, अब मुझे बताइये कि अगर वह जन्नत में है तो मैं सब्र करूं, और अगर वह दूसरी जगह है तो मैं उसको जी भर कर रो लूं, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया ऐ हारिसा की माँ जन्नत में बहुत से दर्जे हैं और तेरा बेटा तो फिरदौसे आला में पहुंच गया।

(बुखारी)

शहीद पर फरिश्तों का साया-

हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ि0 से रिवायत है कि मेरे बाप रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की खिदमत में लाये गये और उन की लाश टुकड़े टुकड़े थी, वह आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सामने रख दिये गये, मैंने उनका चेहरा खोलना चाहा, लोगोंने मुझे रोक दिया, नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया, फरिशते बराबर अपने बाजू से इन पर साया कर रहे हैं। (बुखारी—मुस्लिम)

शहादत की सच्ची तमन्ना-

हज़रत सह्ल बिन हुनैफ रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया जिस शख़्स ने अल्लाह तआ़ला से सच्चे दिल के साथ शहादत का सवाल किया तो वह शहीदों के मरतबे को पहुंचेगा, अगरचि अपने बिस्तर ही पर मरे। (मुस्लिम)

हज़रत अनस रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया जिसने सच्चे दिल के साथ शहादत तलब की तो उसकी तलब पूरी होगी चाहे वह शहीद न हो।

(मुस्लिम)।

शहादत के वक्त की तकलीफ-

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया शहीद को शहादत के वक़्त (यानी तलवार की मार से) उतनी ही तकलीफ होती है जैसे चुटकी लेने से होती है। (तिर्मिजी)

दुशमन के मुकाबले की तमन्ना न करनी चाहिए-

हज़रत अब्दुल्लाह बिन

शेष पृष्ठ .....08.... पर

मानव मस्तिष्क

—डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी

पवित्र कुर्आन में आया है "लक़द ख़लक्नल इन्सान फी अहसनि तक़्वीम" (निःसन्देह हम ने इन्सान को उत्तम तत्व से रचा है। इससे ज्ञात हुआ कि मानव सर्व श्रेष्ठ सृष्टि है वैसे ज्ञान ध्यान वाले सृष्टि के कण कण में अल्लाह की अपार शक्ति देखते हैं और कण कण को उसके रचयता का परिचय देने वाला पाते हैं, किसी ने क्या अच्छी बात कही है—

हमें ज़र्रा ज़र्रा पता दे रहा है
ख़ुदा है ख़ुदा है ख़ुदा है ख़ुदा है

गूढ़ ध्यान देने वालों ने तो इस से आगे की बात कही है, शैख सअ़दी अपनी बोस्ताँ में कहते हैं—

बर्गे दरख़्ताने सब्ज़ दर नज़रे होश्यार
हर वरक़े दफ्तरेस्त मअ़रिफ़ते किर्दिगार

अर्थात हर वृक्ष की हरी पत्तियां बुद्धिमानों की दृष्टि में इस प्रकार दिखती हैं कि एक एक पत्ती अल्लाह ईश्वर के परिचय में एक पुस्तक है।

तात्पर्य यह है कि ईश्वर की हर सृष्टि अदभुत है परन्तु यह मानव शरीर उनमें सर्व श्रेष्ठ है फिर मानव शरीर में मस्तिष्क का उच्चतर स्थान है।

इस मस्तिष्क में अल्लाह ने चिंतन करने, परिणाम निकालने, फिर उस परिणाम के आधार पर नवीन वस्तु उत्पन्न करने अर्थात अविष्कार करने की अपार क्षमता रखी है, आरम्भ काल में अग्नि की प्राप्ति तथा पहिये का आविष्कार अल्लाह के संकेतों से था परन्तु वह साधारण न था, आज उच्च से उच्चतर आविष्कार पहिये और अग्नि के आभारी हैं। इस मानव मस्तिष्क ने पतीली में उबलते पानी से पतीली के ढ़क्कन की खनखनाहट से भाप की शक्ति का ज्ञान प्राप्त किया। फिर सोच विचार कर इंजिन बना डाला, इंजिन को पहियों से जोड़ा, सोचा और यहां तक कि पहियों को दौड़ाने के लिए लोहे की पटरियां (रेल) तैयार कीं और फिर रेल पर रेलगाड़ी दौड़ा दी, मोटर गाड़ियां सड़कों पर दौड़ने लगीं, मानव मस्तिष्क ही ने धरती के नीचे का तेल खोज निकाला फिर उससे डीजल पिट्रोल गैस और नजाने क्या क्या आविष्कृत किया, भाप से चलने वाले इंजिन को डीजल और पिट्रोल से चलने की विधि खोज निकाली, चिंतन करता रहा और सोचता रहा हवाई जहाज़ आविष्कृत कर लिया और हवाई जहाज़ (विमान) द्वारा आकाश में उड़ने लगा, महीनों की यात्रा दिनों और घन्टों में करने लगा, इस मार्ग में और आगे बढ़ा राकेट बना डाला, और राकेट द्वारा चाँद में जा पहुंचा, उपग्रह आविष्कृत किये उनको आकाश के दूसरे नक्षत्रों के छेत्र में पहुंचा कर उनसे न जाने क्या क्या लाभ उठा रहा है। इसी प्रकार मानव मस्तिष्क ने विद्युत की प्राप्ति से बड़ा कारनामा अंजाम दिया आज विद्युत के बिना जीवन की गाड़ी चल ही नहीं

सकती, यह बल्बों और राडों का आविष्करण भांति भांति के पंखों के आविष्करण, गर्मी देने वाली मशीनें, ठन्डा करने वाली मशीनें, एयर कन्डीशन मशीनें यह सब मानव मस्तिष्क ही की देन हैं, मानव मस्तिष्क अल्लाह की कैसी रचना है इस पर चिन्तन करके स्वयं मस्तिष्क ईश्वर के सामने झुक जाता है।

इस मानव मस्तिष्क ने और न जाने क्या क्या खोजा और क्या क्या आविष्कृत किया, भवन निर्माण में सड़कों के बनाने में पुलों के बनाने में आश्चर्य जनक उन्नति की, कपड़ों और वस्त्रों के आविष्कार में बहुत आगे बढ़ गया, संवाद विभाग में तो इतना आगे गया कि जादू लगने लगा, इन्टरनेट, कम्प्यूटर और मोबाइल के आविष्कार को तो अपने पुर्खों को जीवित करके बताया जाये तो वह मानने को तैयार न हों। रोगों के पहचानने एक्सरा, अल्ट्रासाउन्ड, रक्त, थूक, मल, मूत्र का विश्लेषण पुराने लोगों को सब जादू ही लगेगा, यह मानव मस्तिष्क खोज करता और आविष्करण करता ही चला जा रहा है और न जाने कहां तक आगे जाएगा। इस की उक्त तमाम खोजें मानव जीवन को सुख देने वाली और जीवन में सहयोग देने वाली हैं परन्तु बड़े खेद की यह बात भी है कि इसी मानव मस्तिष्क ने जहां अपनी सुरक्षा के लिए तीर तल्वार के स्थान पर बन्दूक व रायफल आविष्कृत किया वहीं उसने एटम बम और हाइड्रोजन बम और न जाने कौन कौन से बम आविष्कृत करके मानव जाति ही पर अत्याचार का मार्ग निकाल दिया। मस्तिष्क के इस आविष्करण ने आज मानव को शान्ति रहित कर दिया है, मनुष्य हर समय भयभीत रहता है कि पता नहीं कहां और कब धमाका हो और यह जीवन समाप्त हो जाय।

आज संसार के उच्च कोटि का मस्तिष्क रखने वाले इस अशांति को समाप्त करने के जो उपाय सोचते हैं उस का परिणाम हीरो शिमा, नागा साकी, वेतनाम, अफगानिस्तान, शाम (सीरिया) इराक के रूप में दिखाई देता है, और फिर अल्लाह तआला का वह कथन सामने आता है जो आरम्भ में लिखे कुर्आन पाक के वाक्य के तुरंत बाद आता है "सुम्म रद्दनाहु अस्फ़ल साफिलीन" (फिर हमने उसके कुकर्मों के कारण सब से निचले स्थान पर पहुंचा दिया) यह सत्य है कि मानव आज बड़ी उन्नति के साथ बड़े ही पतन के स्थान पर है।

निस्संदेह अल्लाह ने मानव मस्तिष्क में उन्नति की अपार क्षमता रखी है परन्तु उसे कुछ महत्वपूर्ण बातों के ज्ञान से वंचित रखा है, यह उसका मर्म है जिसे वही जानता है यह मनुष्य प्राण के ज्ञान से वंचित है, प्राण क्या हैं, कहां से आते हैं और कहां चले जाते हैं, इस ज्ञान को मस्तिष्क नहीं पा सकता है, इसी प्रकार इस जीवन के पश्चात जो जीवन आने वाला है उसका ज्ञान भी यह मस्तिष्क नहीं प्राप्त कर सकता।

इसी प्रकार यह मानव मस्तिष्क यह तो मानता है कि जिस प्रकार बे बनाये एक सूई नहीं बन सकती तो बे बनाये यह विचित्र संसार नहीं बन सकता इस संसार का कोई रचयता अवश्य है परन्तु उस रचयता के बारे में विस्तृत जानकारी यह मानव मस्तिष्क नहीं पा सकता, इसके लिए करीम अल्लाह (दयावान ईश्वर) ने स्वयं प्रबंध कर रखा है और उसने अपने दूतों (पैग़म्बरों) द्वारा यह आवश्यक ज्ञान दिया, जब से यह मानव जगत स्थापित है उसी समय से अल्लाह तआला ने दूतों की श्रृंखला चला रखी है, सबसे पहले पैग़म्बर दादा आदम हैं फिर उनकी सन्तान में यह सिलसिला चलता रहा हर समय में और हर क्षेत्र में दूत भेजे जाते रहे पवित्र कुर्आन में बहुत से पैग़म्बरों के नाम आए हैं और यह कह दिया गया कि और भी बहुत से ईशदूत आए हैं यकीन से नहीं कहा जा सकता परन्तु हो सकता है भारत में जो राम, कृष्ण प्रह्लाद आदि ईशदूत रहे हों जिनको उनके अनुयाइयों ने भूल से या अज्ञानता से अवतार मान लिया हो।

पवित्र कुर्आन कहता है कि अन्तिम ईशदूत हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हैं। समस्त ईशदूतों ने अगले जीवन की सूचना दी और बताया कि यह जीवन तो क्षणिक है शास्वत जीवन वही अगला जीवन है। जो लोग ईशदूतों के बताए मार्ग पर चलेंगे वह उस शास्वत जीवन में अल्लाह की प्रसन्नता पाएंगे और जन्नत का सुख पाएंगे जो लोग ईशदूतों को नकार कर मन माना जीवन बिताएंगे अपने कुकर्मों से अशान्ति फैलाएंगे वह अगले जीवन में ईश्वर के प्रकोप के भागी होंगे वह जहन्नम की आग में डाले जाएंगे।

जो लोग ईशदूतों की बातों पर ईमान रखते हैं वह बम विस्फोट नहीं कर सकते, वह धोखा नहीं दे सकते वह आतंकी नहीं हो सकते वह रक्तपाती नहीं हो सकते, वह घूस नहीं खा सकते, वह व्यभिचार नहीं कर सकते, वह लूट मार नहीं कर सकते वह अत्याचार नहीं कर सकते वह तमाम पापों तथा अपराधों से बचेंगे इसलिए कि वह अल्लाह के प्रकोप से डरते हैं। अगर आप कहें कि मैंने अमुक व्यक्ति का जो धर्म में विश्वास रखता है ईशदूत की बातें मानने का दावा करता है परन्तु वह बाजार में विस्फोट करता है तो हम यह कहेंगे कि वह या तो पागल है या अपने विश्वास में वह झूठा है, जो व्यक्ति ईशदूत पर विश्वास रखता है वह किसी को अकारण कष्ट नहीं पहुंचा सकता। अतः हम को चाहिए कि इस उन्नति पाए अशान्ति काल में शांति लाने के लिए ईशदूतों की शिक्षाएं लोगों तक पहुंचाएं।

यहां एक आवश्यक बात का उल्लेख का वर्णन करता हूं कि संसार में जितने धर्म पाए जाते हैं जिस हाल में भी हैं वह सब के सब शान्ति

प्रिय हैं, अतः समस्त धर्म वाले यदि अपने धर्म का पालन करेंगे तो विश्व में शांति आएगी। परन्तु यह बात भी सत्य है कि तमाम धर्म वालों ने अपने अपने धर्म में अपनी ओर से फेरबदल किया है इस बात को तमाम धर्म वाले स्वीकार भी करते हैं। परन्तु इस्लाम एक ऐसा धर्म है कि इसमें किसी प्रकार का फेरबदल नहीं हुआ है यह पूर्णतया सुरक्षित है इसी लिए ईश्वर ने इसे अन्तिम धर्म समस्त संसार के लिये और संसार के अंत तक के लिये नियुक्त किया है। अतः इस्लाम धर्म पर विश्वास रखने और उसकी शिक्षाओं के अनुसार जीवन बिताने से जहां इस जीवन में शान्ति मिलेगी वहीं अगले जीवन में मोक्ष प्राप्त होगा। हम तमाम धर्म वालों से अनुरोध करते हैं कि वह इस संसार में शान्ति लाने की चेष्टा करें। अल्लाह तआला हम सबकी मदद करे और विश्व में शान्ति पैदा हो।

❖❖❖

प्यारे नबी की प्यारी.....

अबी औफा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम किसी दुशमन से मुकाबले के लिए तैयार हुए और उनका इतनी देर इंतिजार किया कि ज़वाल हो गया, फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम खड़े हो गये और फरमाया ऐ लोगो! दुशमन से मुक़ाबले की तमन्ना न करना, अल्लाह तआला से आफियत मांगते रहना और जब दुशमन से मुकाबला हो तो फिर सब्र करो और जान लो कि जन्नत तलवारों के साये में है फिर फरमाया ऐ अल्लाह किताब के उतारने वाले, बादल के दौड़ाने वाले, लशकर को शिकस्त देने वाले, इनको शिकस्त दे और हमारी मदद फरमा। (बुखारी–मुस्लिम)।

कुबूलियते दुआ का वक़्त–

हज़रत सह्ल बिन सअ़द रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया, दो दुआऐं पलटाई नहीं जातीं या कम रोकी जाती हैं, एक अज़ान के समय, दूसरी लड़ाई के समय, जब कि एक दूसरे पर हमला हो रहा हो।

(अबू दाऊद)।

आँ हज़रत सल्ल0 की दुआ–

हज़रत अनस रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जंग के समय यह दुआ करते थे।

अनुवादः ऐ अल्लाह तू मेरा कुव्वते बाज़ू है और तू ही मेरा मददगार है और तेरी ही मदद और भरोसे पर जंग करता हूँ।

(अबूदाऊद–तिर्मिजी)

हज़रत अबू मूसा अशअ़री रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को जब किसी क़ौम से अंदेशा होता था तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फरमाते थे।

अनुवादः ऐ अल्लाह हम तुझ को इनके सामने करते हैं और इनके शुरूर से पनाह मांगते हैं। (अबूदाऊद)

❖❖❖

प्रस्तुत कर्ताः–

जमाल अहमद नदवी

जगनायक

—हज़रत मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी —अनु0 मुहम्मद गुफ़रान नदवी

बीमारी और वफ़ात—

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के हज का सफ़र आखिरी सफ़र था वह भी आपकी वफ़ात से दो ढ़ाई माह पहले अंजाम पाया था। उसके बाद से ऐसी बातें ज़ाहिर होने लगीं थीं कि जिनसे इशारा मिलने लगा था कि आप सल्ल0 को दुन्या में ज़्यादा दिन नहीं रहना है। आयते करीमा (अलयौम अकमतलु लकुम दीनकुम) अब तुम्हारे लिए मैंने तुम्हारा दीन मुकम्मल कर दिया है और सूरे शरीफ़ा (इज़ाजाआ नसरूल लाहे वलफतहु) जब अल्लाह की मदद आ जाये और फतह कामिल (पूर्ण विजय) हो जाए का भी नुजूल हो चुका था, जिससे सहाबा महसूस कर रहे थे कि हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की वफ़ात का ज़माना क़रीबतर है। खुद हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का तरज़े अमल भी इस बात की तरफ़ इशारा दे रहा था जैसे कि एक मौक़े पर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मिम्बर पर तशरीफ़ लाए और फरमाने लगे— अब तुम लोगों से मुलाक़ात हौज़े कौसर पर होगी। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का यह बलीग़ जुमला (सारगर्भित वाक्य) एक तरफ़ तो सहाबा को जन्नत व रिज़वान की बशारत दे रहा था, दूसरी तरफ़ आने वाले चंद दिनों को सोहबते नबवी (नबवी संगत) से फायदा उठाने के लिए ज़्यादा से ज़्यादा कारआमद (उपयोगी) बनाने का खुला इशारा दे रहा था।

हज के दो माह बाद माहे सफर के आख़िर में बज़ाहिर सोमवार के दिन तबीयत नासाज़ हुई, मौत की बीमारी का आरम्भ दर्देसर से हुआ[1]। सर मुबारक पर पट्टी बांधनी पड़ी और यह असरात थे उस वक्त के जब ख़ैबर में एक यहूदी ने खाने में ज़हर मिला कर आपकी मुबारक ज़िन्दगी खत्म करने की साज़िश की थी, जिसका पता आपको पहले लुकमें में चल गया था, उस पर आपने खाने से हाथ रोक लिया था लेकिन एक लुक़मे ने भी इतना असर कर दिया था जो पूरे तौर अब असर अंदाज़ हुआ और आपको सर की तकलीफ पैदा हो गई।

मगर इस तकलीफ में भी हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इंसानियत को सही रास्ते पर लाने और इस्लामी तालीमात की तरक़्क़ी के लिए फ़िक्रमंद रहे।

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन्हीं दिनों जब आपको यह इत्तिला मिली कि रूमी हुकूमत की तरफ से हमले का खतरा है हज़रत उसामा बिन ज़ैद रज़ि0 की निगरानी में एक लश्कर तैयार किया। हज़रत उसामा के वालिद आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ग़ुलाम रह चुके थे। आपने उनको आज़ाद

1. सीरते इब्ने हिशाम 2/642, सही बुख़ारी, किताबुलमग़ाज़ी, बाब मरज़िन्नबी व वफ़ातुहु।

करके अपने बेटे की तरह साथ रखा था। उसामा जो गोया गुलाम की हैसियत रखे जाने वाले के बेटे थे, उनको उन लोगों पर जो प्रचलित नियमों से उनके मालिकों का दर्जा रखते थे, कमाण्डर बना कर आप ने हर इंसान को दूसरे इंसान के बराबर क़रार देने का यह आला नमूना पेश किया जिसकी नज़ीर पेश करने से दुनिया असमर्थ रही थी और बाद में भी दुनिया की ग़ैर इस्लामी इंसानी सोसाइटी आज से पहले की सदी तक इंसान को इंसान से रंग और नस्ल, आज़ाद और गुलाम का फर्क, ऊँच नींच का सिलसिला सख़्त तरीके से रायज रहा और सिर्फ अभी थोड़ी मुद्दत पहले यू0एन0ओ0 ने इंसान के मसावियाना हुकूक (समान मानव अधिकार) की तजवीज़ पास की और जमहूरी निज़ाम के लिए इसको बुनियादी हैसियत दी। इसके बावजूद खुद यूरोप के इंसानी मसावात के नारे और जमहूरियत और उसके मुहज़्ज़ब (सभ्य) कहलाने वालों के मातहत हुकूमतों में कई जगह यह नस्ली क़ौमी ऊँच नीच का तरीक़ा प्रचलित है और पश्चिमी नस्लें पूर्वी नस्लों को बराबर अपने से कमज़ोर और कमतर समझती हैं। लेकिन इस्लाम जिसने इंसानियत की भलाई और फ़ायदे का पैग़ाम दिया उसके सपूतों ने हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के उस इंसानी मसावात के नमूने को बाद तक सामने रखा। चुंनांचे तारीख़े इस्लाम में कई बार गुलामों को बादशाहत के दर्जे तक पहुंचने का मौक़ा मिला। मध्यपूर्व देशों में एक समय तक गुलामों की हुकूमत रही और हिन्दुस्तान की इस्लामी तारीख़ में भी ऐसा हुआ। हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने तन्हा अल्लाह तआला की इबादत की नसीहत के साथ साथ इंसानी मसावात, इंसाफ, कमज़ोरों के साथ हमदर्दी और सबके साथ ख़ैरखुवाही की भी पूरी ताकीद की। बीमारी के ज़माने में कुछ सहाबा आपकी ख़ैरियत मालूम करने आये। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनका स्वागत किया और यह नसीहत फरमाई कि अल्लाह की बंदियों और उसके बंदों में तकब्बुर (अभीमान) और बरतरी को इख्तियार न करना[1]।

आपको यह फिक्र भी दामनगीर रही कि मालो मता का ज़खीरा न होने पाए, जो आए अल्लाह के रास्ते में दिया जाता रहे। आपने परवरदिगार की नेमतों की शुक्रगुज़ारी और इबादत की ख़ासतौर पर नसीहत फरमाई। आपको नमाज़ की बड़ी फिक्र रहती थी। आपको इसके लिए जमाअत के एहतिमाम (सुव्यवस्था) का बड़ा ख्याल रहा। चुनांचे जब सख़्त बीमारी की वजह से खुद मस्जिद तशरीफ नहीं ले जा रहे थे तो हज़रत अबूबक्र को ताकीद फरमाई कि वह लोगों की इमामत करें। गोया यह इशारा था बाद की इमामत व खिलाफत का जिसे सहाबा ने समझा और आपकी इमामत व खिलाफत पर सहाबा का इजमा (सम्मति) हुआ।

---

1. सीरतुन्नबविया– इब्ने कसीर 4/505

हज़रत अबूबक्र रज़ि0 के सिलसिले में आं हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह बात भी फ़रमाई कि बिलाशुबह कोई शख्स ऐसा नहीं जिसने अपने जान व माल से मुझ पर इतना एहसान किया जितना अबूबक्र रज़ि0 ने किया है[1]।

मुहाजिरीन को अन्सार के सिलसिले में यह वसीयत फरमाई कि उनके साथ अच्छा बरताव रखें[2]।

वफ़ात के करीब आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन लोगों के लिए बड़ा सख्त लहजा इख्तियार किया जो अपने नबियों की क़बरों को उनकी वफात के बाद सज्दागाह बना लेते हैं चूंकि यहूद और नसारा के लोग ऐसा कर चुके थे इसलिए आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमयाः अल्लाह तआला यहूद व नसारा से क़िताल करे उन्होंने अपने नबियों की क़बरों को सजदा गाह बना लिया[3]।

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की आख़िरी वसीयत नमाज़ और मातहतों के साथ अच्छे सुलूक की थी। फरमाते "अस्सलातु वमा मलकत ऐमानुकुम" (देखो नमाज़ का एहतिमाम रखना और अपने मातहतों का) रिवायात (कथन) से मालूम होता है कि आख़िरी अमल आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का मिसवाक करना था और आख़िरी अल्फाज़ जो फरमाए उनमें "ला ईलाहा इल्लल्लाह इन्ना लिल मौते ल सकरात" (कि अल्लाह के अलावा कोई और लायक़े इबादत व तारीफ नहीं बेशक मौत के साथ सकरात) (मृत्यु यातना) होते हैं। फिर "फिर रफ़ीक़िल आला, फिर रफ़ीक़िल आला" (बेशक सबसे आला और ऊँचे रफीक के पास) फरमाया! रूहे मुबारक का रुख आलमे बाला की तरफ़ हो गया[4]।

"इन्नालिल्लहि व इन्नाइलैहि राजिऊन"

हज़रत आयशा रज़ि0 फरमाती हैं "जिस वक्त जुदाई की घड़ी करीब आई तो उस वक्त आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का सर मेरी रान पर था एक घड़ी के लिए आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर बेहोशी तारी हुई फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को होश आ गया और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने घर की छत की तरफ नज़र उठायी और फ़रमाया "बेशक सबसे आला और ऊँचे रफीक के पास" यह वह आख़िरी अल्फाज़ थे जो दुनिया से जाते वक्त आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़बाने मुबारक से निकले।"

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जब इस दुनिया से पर्दा फरमाया तो उस वक्त पूरा अरब द्वीप आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मातहत था। दुनिया के बादशाहों और उमरा पर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का जलाल व रोब था। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा किराम आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर अपनी औलाद व माल व मता सब निछावर

---

1. सही बुख़ारी किताबुस्सलात
2. सही बुख़ारी
3. मुअ़त्ता इमाम मालिक
4. देखिए सही बुख़ारी बाब मरजिन्नबी व वफ़ातिहि

करने पर तैयार रहते थे। इस सबके बावजूद आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इस हाल में दुनिया से तशरीफ़ ले गए कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक दीनार या दिरहम एक गुलाम या लौंडी या कोई चीज़ भी पीछे नहीं छोड़ी। सिर्फ आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का एक सफेद खच्चर था। आपके हथियार थे एक कतअ़ ज़मीन जिसको आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सदक़ा कर दिया था[1]।

आपकी वफ़ात इस हालत में हुई कि आपकी ज़िरह एक यहूदी के पास तीन साअ जौ पर रेहन रखी हुई थी और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास कोई चीज़ न थी कि आप उसे दे कर ज़िरह को छुड़ा सकते यहां तक की आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम दुनिया से तशरीफ ले गए[2]।

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने मरज़े वफ़ात में 40 गुलामों को आज़ाद फ़रमाया। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास 7 या 6 दीनार थे। हज़रत आयेशा रज़ि0 को हुक्म हुआ कि उनको भी सदक़ा कर दें।

उम्मुलमोमिनीन हज़रत आयेशा रज़ि0 रिवायत करती हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की वफ़ात इस हालत में हुई कि मेरे घर में कोई ऐसी चीज़ न थी जिसको कोई जानदार खा सकता। अलबत्ता ज़रा सा जौ मेरी अलमारी पर रखा हुआ था, मैंने उसी में से कुछ खाया वह बहुत दिन चला। यहां तक कि मैंने उकसी नाप तौल की बस उसी के बाद खत्म हो गया[3]।

वफात का सहाब-ए-कराम पर असर-

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की वफ़ात की खबर सहाब-ए -कराम पर बिजली बन कर गिरी। इसकी वजह उनका वह आशिकाना तअल्लुक था जिसकी मिसाल इंसानी तारीख में नहीं मिलती। वह आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साए शफक़त में इस तरह रहने के आदी हो गये थे कि जिस तरह बच्चे माँ बाप की आगोश-ए- महब्बत में रहते हैं। बल्कि उससे भी ज़्यादा इस लिहाज़ से उन पर आपकी वफ़ात का जितना भी असर पड़ता कम था। अल्लाह तआला का इरशाद है:

"लोगो तुम्हारे पास तुम्हीं में से एक पैग़म्बर आए हैं तुम्हारी तकलीफ उनको भारी मालूम होती है और तुम्हारी भलाई के बहुत ख्वाहिशमंद हैं और ईमानवालों पर निहायत शफकत करने वाले और मेहरबान हैं।"

(सूरा तौबा 128)

अकीदतमंदों को यह यक़ीन नहीं आता था कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जो कि रब्बुलआलमीन के सबसे श्रेष्ठ नबी हैं इस दुनिया से यूं ही चले जायेंगे। उनमें आगे आगे हज़रत उमर रज़ि0 थे, चुनांचे उन्होंने तलवार खींच ली, कि जो यह कहेगा कि अल्लाह के रसूल की वफ़ात हो चुकी है मैं उसका

---

1. सही बुख़ारी, बाबु मरजिन्नबी व वफ़ातिहि, बैहक़ी 56
2. अस्सीरतुल हलबिया 3/381
3. बुख़ारी, किताबुर्रिक़ाक़ बाब फ़ज़लिलफ़क़्र, व मुस्लिम किताबुज़्ज़ोहद।

सर उड़ा दूंगा वह मस्जिदे नबवी में आए और लोगों के सामने खुतबा दिया और कहा कि "रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम" की वफात उस वक्त तक न होगी जब तक अल्लाह तआला मुनाफिकों को खत्म न कर देगा[1]।

लेकिन हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि0 तशरीफ लाए और मस्जिदे नबवी के दरवाज़े पर एक लम्हे के लिए रुके उस वक्त हज़रत उमर रज़ि0 लोगों से खिताब कर रहे थे फिर वह किसी ओर ध्यान दिये बिना सीधे हज़रत आइशा रज़ि0 के घर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के करीब पहुंचे आप पर एक चादर उढ़ायी हुई थी उन्होंने चेहरे मुबारक से चादर सरकाई और झुक कर रूए मुबारक का बोसा लिया और कहा कि मेरे माँ बाप आप पर कुर्बान! मौत का जो ज़ायका अल्लाह तआला ने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लिए मुकद्दर किया था, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उसे चख लिया। अब इसके बाद आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को दुबारा मौत के मरहले से गुज़रना न होगा। फिर आप बाहर आए और देखा कि लोग परेशानी के आलम में हक़ीक़ते वाक़या (घटना की वास्तविकता) को समझ नहीं पा रहे हैं और उनका ध्यान "वही–ए– इलाही" की उस आयत की तरफ नहीं जा रहा है जिसमें आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को भी वफात के मरहले से गुज़रने को बयान कर दिया गया है। चुनांचे आप मिम्बर पर आए और कुरआन शरीफ की वह आयतें पढ़ कर सुनाईं तो लोगों की आंखें खुलीं और इस निश्चित घटना का यकीन आया[2]।

हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि0 ने अल्लाह की हम्द व सना के बाद कहा– "लोगो! अगर कोई मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की इबादत करता था तो उसको मालूम हो जाये कि बिला शुबहा उनकी वफ़ात हो गयी और अगर अल्लाह तआला की इबादत करता था तो इतमीनान रखे कि अल्लाह तआला जिंदा है और उसके लिए मौत नहीं" फिर आपने यह आयत तिलावत की–

अनुवादः "और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तो सिर्फ खुदा के पैग़म्बर हैं, उनसे पहले बहुत से पैग़म्बर गुज़रे हैं, भला अगर उनकी वफात हो जाए या शहीद कर दिये जाएं तो तुम उलटे पांव फिर जाओ (यानी मुरतद हो जाओ) और जो उलटे पांव फिर जायेगा तो खुदा का कुछ नुकसान नहीं कर सकेगा, और ख़ुदा शुक्रगुज़ारों को बड़ा सवाब देगा।"

(सूरः आले इमरान–144)

जो लोग इस मौक़े पर हाज़िर थे और यह मंज़र देख रहे थे, उनका बयान है कि "खुदा की क़सम जब हज़रत अबूबक्र रज़ि0 ने यह आयत तिलावत की तो ऐसा महसूस हुआ कि यह आयत अभी नाज़िल हुई है और हज़रत अबूबक्र ने उनके मुंह की बात कह दी।" हज़रत उमर रज़ि0 बयान करते हैं कि मैंने "जब अबूबक्र रज़ि0 को यह आयत तिलावत करते सुना तो हैरतज़दा हो कर खुद बखुद ज़मीन पर गिर गया मेरे पैरों की ताकत खत्म हो चुकी थी।

उस वक्त गोया मुझे

1. अलबिदाया वन निहाया 5/242
2. सीरत इब्ने हिशाम 2/655

यह इल्म हुआ कि हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इन्तिक़ाल हो गया है।

मौलाना सैय्यद अबुल हसन अली नदवी लिखते हैं कि "आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की वफ़ात सोमवार के दिन 12 रबीउलअव्वल सन् 11 हिजरी को दोपहर के बाद हुई। उस समय आपकी आयु चांद की तारीख के हिसाब से 63 साल थी। यह मुसलमानों के लिए सबसे ज़्यादा तारीक (अंधकारपूर्ण) और घबराहट का दिन था, सबसे बड़ा सदमा और आज़माईश और पूरी इंसानियत के लिए सबसे बड़ी घटना थी, जब कि आपका जन्म दिवस इंसानियत का सबसे मुबारक, रौशन और ताबनाक (प्रकाशमय) दिन था। हज़रत अनस व अबू सईद खुदरी रज़ि0 बयान करते हैं कि जिस दिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मदीना तशरीफ लाए थे तो मदीने की हर चीज़ आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की आमद से रोशन व मुनव्वर हो गई थी। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को बचपन में खिलाने वाली खातून उम्मे ऐमन भी रो रही थीं। लोगों ने वजह पूछी तो उन्होंने जवाब दिया कि बेशक मुझे मालूम था कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इस दुनिया से तशरीफ ले जायेंगे लेकिन मैं इस बात पर रो रही हूं कि अब "वही" का सिलसिला भी हमसे हमेशा के लिए खत्म हो गया[1]।

(नबी–ए–रहमत पृ0 554–555)

जिस मकाम पर आपकी वफात हुई उम्मुलमोमिनीन हज़रत आयशा रज़ि0 के हुजरे में उसी मक़ाम पर अगले रोज़ मंगल को तदफीन अमल में आई। यह खुद हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के उस इशारे के बिना पर हुआ कि नबियों की वफात जिस जगह पर होगी वहीं तद्फीन होती है। गुस्ल और कफ़न दफन का काम अहले बैत ने अंजाम दिया। कब्र एक अंसारी सहाबी हज़रत अबूतल्हा ने खोदी, जनाज़ा उसी जगह रखा रहा। एक एक जमाअत आती रही और नमाज़ अदा करती गई।

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की वफात का सदमा इतना सख्त था, जिसकी तस्वीर नहीं खींची जा सकती। हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का एक जुमला उस कैफियत को बिला किसी कमीबेशी के बयान कर देता है। फरमाया! ऐ लोगो तुममें से (या अहले ईमान में से) किसी को भी कोई मुसीबत पेश आए तो वह उस मुसीबत से तसल्ली हासिल करे जो मेरी वफ़ात से पेश आएगी। इसलिए कि मेरी उम्मत में किसी शख़्स को मेरी वफ़ात के सदमे से बढ़ कर कोई मुसीबत पेश न आयेगी।

और साहबज़ादी–ए–रसूल जिगरगोश–ए–नबी सय्यदना फातिमा रज़ि0 ने हज़रत अनस रज़ि0 से जब कि वह आपकी तदफीन में शिर्कत करके लौटे फरमाया "अनस! तुम्हारे दिल इस बात पर कैसे राज़ी हुए कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को ख़ाक के अन्दर रखो और मिट्टी डालो।

---

1. नबी–ए–रहमत पृ0 554–555)

हिन्दुस्तानी मुसलमान एक दृष्टि में

पैदाइश से बालिग़ होने तक आधारभूत इस्लामी आस्थाएं

—हज़रत मौलाना अली मियाँ नदवी रह0

जुमा का खुत्बा–

हर ऐसी मस्जिद में जहाँ जुमा होता है (और अब बड़े नगरों में अधिकांश मस्जिदों में होता है) मिम्बर मौजूद होता है, जब ख़तीब उस पर पहुँच जाता है तो एक दूसरी अज़ान पहली पंक्ति में खड़े हो कर या कुछ पीछे हट कर दी जाती है जिसके वही शब्द होते हैं जो इसके पूर्व वर्णन किये जा चुके हैं। फिर खतीब खड़े हो कर खुत्बा पढ़ता है। इस खुत्बे का मूलाधार अथवा लक्ष्य तो यह था कि खतीब इस अवसर पर एक संक्षिप्त भाषण दे जिसमें धर्म के मूल सिद्धान्तों तथा शिक्षाओं को प्रस्तुत करे और समय तथा परिस्थिति से सम्बन्धित कोई आवश्यक बात या कोई सामूहिक सन्देश है तो उचित एंव संक्षिप्त रूप से मुसलमानों तक पहुंचा दे, यही रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का तरीक़ा था। आप का खुत्ब–ए–जुमा शक्तिपूर्ण, प्रभावपूर्ण, जीवन से भरपूर और संतुलित आकार का होता था अब भी अनेक इस्लामी देशों में इसके अनुसरण का प्रयास किया जाता है और हर जुमा को नया खुत्बा होता है। लेकिन भारतवर्ष तथा बहुत से अजमी[1], देशों में, जिनकी भाषा अरबी नहीं है, इस पद्धति को कठिन समझ कर, अब किसी छपी हुई पुस्तक से खुत्बा पढ़ दिया जाता है या इमामों को कंठस्थ होता है, इसके बाद खतीब कुछ क्षणों के लिए बैठ जता है, फिर दूसरा खुत्बा देता है। कुछ स्थानों पर पहले तथा दूसरे खुत्बे के बीच स्थानीय तथा लोक भाषाओं में नमाज़ियों से खिताब करने तथा भाषण देने का रिवाज़ प्रचलित हो गया है।

एक अरबी खुत्बा का अनुवाद–

यहाँ नमूने के तौर पर एक अरबी 'खुत्बा' का अनुवाद प्रस्तुत किया जाता है, जो हिन्दुस्तान में अधिक मान्य तथा प्रचलित है[2], और अधिकांश बड़े बड़े आलिम इसी को (किताब में देख कर या मौखिक रूप से) पढ़ते हैं:–

अल्लाह के गुण गान तथा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर दुरूद व सलाम के बाद, "लोगो तौहीद (एकेश्वरवाद) को अंगीकार करो (अल्लाह को अपने अस्तित्व एवं गुणों में एक समझो और किसी को भी उसका साझी न बनाओ) इसलिए कि तौहीद खुदा का सबसे बड़ा आज्ञापालन तथा सबसे उत्तम कर्म है, प्रत्येक कार्य में अल्लाह से शर्म व लेहाज़ करो, इसलिए कि यह शर्म व लेहाज़ की प्रवृत्ति समस्त भलाइयों की जड़ है।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के आचार

---

1. अरबी भाषी देशों के अतिरिक्त समस्त देश अजमी कहलाते हैं।
2. यह खुत्बा मौलाना मुहम्मद इस्माईल देहलवी (मुतवफ़्फ़ी, 1246 हि0 1830 ई0) की रचना है।

व्यवहार (सुन्नत) को सुदृढ़तापूर्वक पकड़ो, इस लिए कि सुन्नत, अनुसरण तथा आदेश पालन की ओर मार्ग दर्शन करती है, और जो अल्लाह और उसके रसूल का आदेश पालन करेगा, वह सीधे मार्ग पर अग्रसर, और अभीष्ट लक्ष्य का पाने वाला होगा। दीन में जो नई नई बातें (बिदअत) निकाली गई हैं, उनसे सदैव दूर रहना, इस लिए कि इसका परिणाम खुदा की अवज्ञा एवं मार्ग भ्रष्टता है। अपने समस्त जीवन में सत्य का पालन करो, इसलिए कि सत्य में कल्याण तथा असत्य में बरबादी है। उपकार एवं शुभ व्यवहार को अपने जीवन का नियम बनाओ, इसलिए कि अल्लाह को उपकार करने वाले प्रिय हैं। अल्लाह की रहमत (दया, अनुकम्पा) से कभी निराश न हो, इसलिए कि वह समस्त दया करने वालो में सबसे अधिक दया करने वाला है। दुनिया पर रीझ मत जाना कि सब कुछ खो बैठो, देखो! किसी को उस समय तक मौत नहीं आ सकती जब तक कि उसकी नियत जीविका न प्राप्त हो जाए। अतः खुदा की अवज्ञा और वैध–अवैध, उचित अनुचित साधनों द्वारा जीवकोपार्जन का प्रयास व्यर्थ है। अपने उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु साधन भी अच्छे ग्रहण करो। अपने समस्त कार्यों में खुदा पर भरोसा रखो, इसलिए कि उसको अपने ऊपर भरोसा करने वालों का बड़ा ध्यान है, दुआ में कमी न करो इसलिए कि खुदा सबकी सुनता और सबकी झोली भरता है। उससे अपने पापों तथा अपराधों के प्रति क्षमा याचना करते रहो और इस्तिग़फ़ार[1] करते रहो, इससे तुम्हारे माल एवं परिवार में अभिवृद्धि होगी।

अल्लाह तआला कुरआन मजीद में फ़रमाता है।

तुम्हारे रब (पालने वाले) ने कह दिया कि मुझ से मांगो मैं कुबूल करूंगा। जो लोग मेरी इबादत से अहकारवश कनियाते हैं, जल्द ही वह अपमानित हो कर, 'जहन्नम' में प्रवेश करेंगे।

(अल मोमिन–60)

अल्लाह हमको और तुमको कुरआन की दौलत में से अधिक से अधिक हिस्सा प्रदान करे, और हम को और तुमको उसकी आयतों तथा उसके ज्ञान पूर्ण उपदेशों से लाभ पहुंचाए। मैं अपने लिए, तुम्हारे लिए और समस्त मुसलमानों के लिए खुदा से क्षमा याचना करता हूँ, तुम भी उससे क्षमा की भीख मांगो, बहुत दयावान तथा क्षमा प्रदान करने वाला है।

दूसरे खुत्बे के अंश–

दूसरे खुत्बे का एक महत्वपूर्ण अंग सलात–व–सलाम, चारों खुलफ़ाए–राशिदीन[2], अहलबैत–किराम के लिए क्षमादान तथा पदोन्नति हेतु दुआ और तमाम मुसलमानों के लिए, संसार के लिए अच्छाई, भलाई तथा कामयाबी के लिए दुआ है। सामान्यतः इस खुत्बे का अन्त कुरआन मजीद की इस आयत पर किया जाता है।

निस्सन्देह अल्लाह न्याय, उपकार तथा नातेदारों को (उनका हक़) देने का आदेश देता है। और अशलील कर्म तथा बुराई और जुल्म व ज़ियादती से मना करता है।

---

1. क्षमा याचना– (अनु0)
2. हज़रत मुहम्मद सल्ल0 के चार प्रिय उत्तराधिकारी जिनके नाम क्रमशः हैं– हज़रत अबू बक्र, हज़रत उमर, हज़रत उस्मान तथा हज़रत अली रज़ि0 (ईश्वर इन सब से राजी हो) (अनु0)।

वह तुम्हें सदोपदेश देता है ताकि तुम ध्यान दो।

(सूरा–अन्नहल 13/90)

नमाज़ जुमा तथा उसके बाद सामान्य व्यवसायिक व्यस्तता–

खुत्बे के बाद इमाम मिम्बर से उतर कर मेहराब[1] में खड़ा हो जाता है और उसी प्रकार नमाज़ आरम्भ करता है जैसे उपर्युक्त वर्णन किया जा चुका है। नमाज़ समाप्त होने के बाद लोग दो या चार सुन्नतें वहीं मस्जिद में या घर में पढ़ कर अपने व्यावसायिक धन्धों में व्यस्त हो जाते हैं और खुदा की भी यही इच्छा कुरआन मजीद में बयान की गई है कि इसके बाद व्यर्थ समय नष्ट करना अथवा बेकार रहना ज़रूरी नहीं, लोग व्यापार, खेती बाड़ी और अन्य सांस्कृतिक, आर्थिक तथा ज्ञानात्मक कार्यों में व्यस्त हो सकते हैं और जीवन सम्बन्धी कार्य क्रमों को सुचारू तथा सामान्य रूप से धारण कर लेना चाहिए।

1. मस्जिद के मध्य में इमाम के खड़े होने का स्थान। (अनु0)।

❖❖❖

कुर्आन की शिक्षा.....

कि अल्लाह तआ़ला ज़बरदस्त कुदरत वाला है जो चाहे कर सकता है और उसके हर आदेश में इस कदर हिकमतें होती हैं कि जिनका इदराको इहाता यानी पूरा इल्म अगर हमको न हो तो यह हमारे नुकसाने इल्म की बात है, उसकी हिकमत का इंकार ऐसे उमूर से हरगिज़ मुम्किन नहीं, वल्लाहु आलम, यानी अल्लाह जियादा जानने वाला है।

आयतल कुर्सी में इल्मो कुदरत वगैरह सिफाते इलाही का जिक्र फरमाया, उसके आद यह तीन किस्से बयान फरमाये कि अल्लाह जिसको चाहे हिदायत कर सकता है और जिसको चाहे गुमराह कर सकता है और मारना जिलाना सब उसके इख्तियार में है अब जिहाद और अल्लाह की राह में माल खर्च करने की फज़ीलत और उसके मुतअ़ल्लिक़ नियम व शर्तें बयान फरमाते हैं जिसका ज़िक्र किसी क़द्र गुजर भी चुका है क्योंकि जिहाद और माल खर्च करने में जो रुकावटें नज़र आती हैं हक तआ़ला के इल्म व कुदरत के यकीन कर लेने के बाद और उसकी अ़जाइबे कुदरत के हालात मालूम होने के बाद उनका खातमा होगा वरना कमी तो उनमें ज़रूर आना चाहिए।

4. यानी अल्लाह की राह में थोड़े माल का भी सवाब बहुत है जैसे एक दाने से सात सौ दाने पैदा हों और अल्लाह तअला बढ़ाये जिसके वास्ते चाहे और सात सौ से सात हजार और उससे भी जियादा करदे और अल्लाह बहुत बख्शिश करने वाला और हर एक खर्च करने वाले की नीयत और उसके खर्च की मिक़दार और माल की कैफियत को खूब जानता है यानी हर एक से उसके मुनासिब मुआमला फरमाता है।

❖❖❖

–प्रस्तुति–
जमाल अहमद नदवी सुलतानपुरी

आपके प्रश्नों के उत्तर ?

—मुफ़्ती ज़फर आलम नदवी

प्रश्न: अगर कोई शख्स बीमार हो जाय और दवा इलाज न कराये और इन्तिक़ाल कर जाय तो क्या इलाज न कराने के सबब अल्लाह के नज़दीक पकड़ होगी?

उत्तर: नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मरीज के लिए इलाज कराने की तरग़ीब दी है, शिफा देने वाला अल्लाह है दवा यक़ीनी सबब नहीं है, इस लिए अगर कोई अपने मरज़ का इलाज न कराये और उसका इन्तिक़ाल हो जाय तो उसकी अल्लाह के नज़दीक पकड़ न होगी। (मजमउल अन्हार 180/4)

प्रश्न: कुछ लोग कहते हैं कि चोट पर अगर शराब से मालिश की जाय तो चोट का असर और दर्द खत्म हो जाता है, तो क्या शराब से चोट पर मालिश करना दुरुस्त है?

उत्तर: शराब की मालिश नाजाइज है, चोट और दर्द के लिए दूसरी दवाएं मौजूद हैं, नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का हुक्म है कि हराम चीज़ से इलाज न करो। (मिशकातः 388) फुकहा ने सराहत की है कि शराब से इलाज कराना जाइज़ नहीं है। (फतावा हिन्दीया 355/1)

प्रश्न: कुछ एलो पैथिक और होम्योपैथिक दवाओं में अलकोहल डाला जाता है, तो ऐसी दवाएं इस्तेमाल करना दुरुस्त है या नहीं?

उत्तर: अलकोहल अगर दवा में आधे से कम हो (मालूम हो) और दूसरे अज़ज़ा ग़ालिब हों (आधे से ज़्यादा हों) और कोई बदले की दवा मौजूद न हो तो कम मिक्दार में मिले अलकोहल दवाओं का इस्तेमाल दुरुस्त होगा। (रद्दुल मुहतार 284/1)

प्रश्न: कुछ अतिब्बा (चिकित्सक) बताते हैं कि केकड़े को जला कर शहद में मिला कर इस्तेमाल करने से पुरानी खांसी दूर हो जाती है इसी तरह कछूए को पका कर खाने से खांसी में फाइदा बताते हैं क्या इन का इस्तेमाल दवा के तौर पर दुरुस्त होगा?

उत्तर: पानी के जानवरों में अहनाफ़ के नज़दीक मछली के सिवा कोई और जानवर खाना दुरुस्त नहीं है, लेकिन केकड़े को मार कर अगर जला दिया जाये तो माहीयत (मूल तत्व) बदल जाने की वजह से उसका हुक्म बदल जाएगा और उसका खाना मना नहीं होगा, कछुवा खाना दुरुस्त नहीं लेकिन अगर कोई दीनदार तजरिबेदार डाक्टर किसी मरज़ में यही दवा तजवीज़ करे तो उसके खाने की भी इजाज़त होगी।

(रद्दुल मुहतारः 113/4)

प्रश्न: सुअर की चरबी जिन चीज़ों में हो उनका इस्तेमाल दुरुस्त है या नहीं?

उत्तर: सुअर और उसकी चरबी नजिसुल ऐन (सम्पूर्ण अपवित्र) है अगर यकीन से

मालूम हो जाये कि फुलां चीज़ में सुअर की चरबी है तो उसका इस्तेमाल जाइज़ न होगा, बल्कि हराम होगा।

रद्दुलमुहतारः 308/4)

प्रश्नः इन्सानी खून किसी मरीज़ के जिस्म में चढ़ाना दुरुस्त है या नहीं?

उत्तरः अगर मरीज की हालत बेचैनी की हो और मौत का खतरा हो और इन्सानी खून चढ़ाऐ बिना जान बचने की कोई सूरत न हो तो ऐसी मजबूरी की हालत में खून चढ़ाने की गुंजाइश है।

(फतावा हिन्दीयाः355/5)

प्रश्नः क्या शौहर का खून बीवी के जिस्म में दाखिल करना दुरुस्त है? जब कि सिवाए शौहर के किसी और का ब्लड ग्रूप नहीं मिल रहा हो, इससे निकाह तो नहीं टूट जाएगा?

उत्तरः इन्सानी खून के बिना जान बचाना मुश्किल हो तो किसी औरत के जिस्म में शौहर का खून दिया जा सकता है। और इससे निकाह पर कोई असर नहीं पड़ेगा, इसी तरह बीवी का भी खून शौहर के बदन में चढ़ाया जा सकता है।

(रद्दुल मुहतारः44/4, जवाहिरुल फिक्ह 40/2)

प्रश्नः किसी ऐसे इन्सान का जो मौत के करीब हो या मरे हुए इन्सान का कोई अज़्व जैसे आँख या गुर्दे वग़ैरह दूसरे इन्सान के जिस्म में लगाना कैसा है?

उत्तरः किसी मरने के करीब या मरे हुए इन्सान का गुर्दा या आँखें वगैरह किसी दूसरे इन्सान के जिस्म में लगाना दुरुस्त नहीं है। (मजमउल अन्हारः85/3)

प्रश्नः आज कल खत्ने की खाल की ख़रीद व फरोख्त हो रही है, प्लास्टिक सर्जरी या खाल की पैवन्दकारी में यह इस्तेमाल हो रहे हैं, क्या इसकी प्लास्टिक सर्जरी । पैवन्दकारी दुरुस्त है? क्या इसकी खरीद व फरोख़्त जाइज़ है?

उत्तरः इन्सानी ज़िस्म का हर जुज़्व (अंग) क़ाबिले एहतिराम है खत्ने की खाल भी इसमें शामिल है इसलिए उसकी खरीद व फ़रोख़्त दुरुस्त नहीं और ना ही पैवन्दकारी ना प्लास्टिक सर्जरी दुरुस्त है। (दुर्रुल मुख्तार मअ़ रद्दुल मुहतारः275/7)

प्रश्नः अगर किसी शख्स की एक उंगली जाइद हो और वह खराब लगती हो तो क्या उसको कटवाना दुरुस्त है?

उत्तरः जब जाइद उंगली बुरी लग रही हो तो उसको कटवाने की गुंजाइश है। (फतावा हिन्दीयाः 360/5)

प्रश्नः क्या अल्लाह तआ़ला के आखिरी नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का नाम ज़बान से अदा करने या किसी से सुनने या लिखने पर दुरूद पढ़ना वाजिब हो जाता है?

उत्तरः हाँ अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का नाम नामी जुबान से अदा करने या सुनने या लिखने पर दुरूद वाजिब हो जाता है।

प्रश्नः कुछ लोग आप

सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के नामे मुबारक लिखने के बाद सल्ल0 या इसी तरह का कोई और संकेत लिख देते हैं क्या इससे वाजिब अदा हो जायेगा?

उत्तर: अगर नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का नामे मुबारक लिखने पर ज़बान से दुरूद पढ़ कर सल्ल0 आदि संकेत लिख दिया है तो वाजिब अदा हो जायेगा लेकन अगर दुरूद ज़बान से नहीं पढ़ा सिर्फ संकेत लिखा तो वाजिब नहीं अदा हुआ, फिर उस लेख को पढ़ने वाला अगर दुरूद न पढ़ेगा सिर्फ संकेत पढ़ेगा तो उसका वाजिब रह जायेगा अतः संकेत कदापि न लिखें पूरा दुरूद लिखें।

प्रश्न: अगर नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का नामे मुबारक मुहम्मद या अहमद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम न आए सिर्फ रसूल या नबी या पैगम्बर आदि आए तो क्या तब भी दुरूद पढ़ना ज़रूरी होगा?

उत्तर: जिस लफ़्ज़ से अल्लाह के नबी मुराद हों जैसे आप के नबी या रसूल उस पे दुरूद पढ़ना ज़रूरी जानें।

प्रश्न: अगर नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के नाम के बाद सिर्फ अ़लैहिस्सलाम लिखें तो वाजिब अदा हो जाएगा या नहीं?

उत्तर: चाहिए कि "अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम" सिर्फ अलैहिस्सलाम लिखना भी जाइज़ है।

प्रश्न: अगर कोई "हज़रत मुहम्मद (उन पर अल्लाह की दया हो) कहे या लिखे तो वाजिब अदा हो जाएगा या नहीं?

उत्तर: दया का अर्थ है रहम अतः अगर कहा "हज़रत मुहम्मद (उन पर अल्लाह की दया हो) तो वाजिब अदा हो गया वल्लाहु आलम।

प्रश्न: अगर कोई अपनी तकरीर व तहरीर (लेख) में कई बार अल्लाह के नबी, या अल्लाह के रसूल शब्द बोले या लिखे मगर हर बार दुरूद न पढ़े बल्कि तकरीर या तहरीर के आखिर में "सल्लल्लाहु अल नबीयिन व सल्लम" कह दे तो वाजिब अदा हो जाता है या नहीं?

उत्तर: अगर कोई अपनी तकरीर या तहरीर में बार बार नबी या रसूल का शब्द बोले और हर बार दुरूद न पढ़े मगर आखिर में सल्लल्लाहु अ़ला नबीयिन व सल्लम कह दे तो इनशा अल्लाह वाजिब अदा हो जाएगा। वल्लाहु आलम बिस्सवाब।

प्रश्न: किसी इन्सान का खून क्या दूसरे इन्सान के बदन में दिया जा सकता है?

उत्तर: खून इन्सान का जुज्व है और जब बदन से अलग कर लिया जाए तो नजिस है, इसलिए इसका अस्ल तक़ाजा यह है कि किसी दूसरे इन्सान के बदन में दाखिल न किया जाए। लेकिन अगर मरीज़ की हालत ऐसी हो कि खून चढ़ाये बिना जान बचनी मुशकिल हो और मुस्लिम

माहिर तबीब (डॉक्टर) का मशवरा हो तो मजबूरी के हालत में जान बचाने के लिए एक इन्सान का खून दूसरे इन्सान के जिस्म मे चढ़ाया जा सकता है।

(फतावा हिन्दीया 355/5)

प्रश्न: क्या खून की खरीद व फरोख़्त जाइज़ है? न मिलने की सूरत में अतीया करना या अतीया न मिलने की सूरत में खरीदना जाइज़ है?

उत्तर: इन्सानी जिस्म के किसी भी जुज्व (भाग अथवा अंग) की खरीद व फ़रोख्त जाइज नहीं है, लेकिन किसी इन्सान की जान बचाने के लिए बतौरे अतीया (उपहार) खून न मिल सके तो मजबूरन खरीदने की इजाज़त होगी, लेकिन बेचने वाले के लिए बेचना और उसकी क़ीमत लेना शरअन जाइज़ नहीं है। अलबत्ता बतौरे अतीया किसी की जान बचाने के लिए खून देना दुरुस्त है। (अल मबसूत सरखसी 127/15)

प्रश्न: आज कल ब्लेड बैंक काइम हैं और रज़ाकाराना कैम्प (स्वेच्छित शिविर) भी खून का अतीया हासिल करने के लिए लगते हैं, क्या उनमे अतीया के तौर पर खून देना दुरुस्त होगा? जब कि बैंक में खून जमा करने की सूरत में जमा करते वक्त मरीज को ज़रूरत नहीं है।

उत्तर: ऐसे ब्लड बैंक जहां लोग रज़ाकाराना तौर पर खून का अतीया देते हैं और वह ब्लड बैंक जरूरत मंदों को मुफ्त खून फराहम करते हों तो वहां मुसलमानों के लिए खून का अतीया पेश करना जाइज है। क्यों कि मौजूदा दौर में किसी वक्त भी ब्लड की ज़रूरत पड़ती रहती है, कुदरती और ग़ैर कुदरती नागहानी वाक़िआत (आपत्तियां) आये दिन पेश आते रहते हैं बैक वक्त मुखतलिफ (विभन्न) ग्रूप के ब्लड की ज़रूरत पड़ती रहती है इसलिए अगर पहले से ब्लड जमा न हो तो ज़रूरत मन्दों की जान बचाना मुशकिल हो जाय। इसलिए पहले ही से खून का अतीया देना दुरुस्त है।

(अलफिक्हुल इस्लामी 2614/4)

प्रश्न: क्या किसी की जान बचाने के लिए अतीया (उपहार) के तौर पर गुर्दा या जिगर देना दुरुस्त है? जब कि आज की तिब्बी दुन्या (चिकित्सा जगत) में जिगर का बदलना भी आसान हो गया है?

उत्तर: हर इन्सानी आज़ा (अंगों) का बदलना अस्लन जाइज़ नहीं है, लेकिन जब जदीद तिब (आधुनिक चिकित्सा) में आसानी से एक इन्सान का जिगर दूसरे को नुक्सान पहुंचाये बिना देना मुमकिन हो जैसा कि आज कल ऐसा हो रहा है तो इस शर्त के साथ बदलना दुरुस्त है जब कि किसी दीनदार माहिर डाक्टर ने इसकी इजाजत दी हो शैख वहबा अज़्ज़हीली ने ज़म्हूर का मसलक बताते हुए जवाज का फतवा दिया है। (अल फिक्हुल इस्लामी 2609/4)

किसी इन्सान का पूरा जिगर निकाल लिया जाये तो वह जिन्दा नहीं रह सकता है। अलबत्ता कोई इन्सान डाक्टर के मशवरे से अपना एक गुर्दा किसी दूसरे को दे कर उसकी जान बचा सकता है और खुद भी जीवित रह सकता है। हाँ अगर माहिर डाक्टर बताए कि किसी के जिगर का थोड़ा हिस्सा निकाल कर दूसरे के जिगर में लगा दिया जाय तो दोनों जीवित रह सकते हैं तब तो जवाज की सूरत समझ में आती है।

(सम्पादक)

प्रश्नः क्या किसी इन्सान की आँख या उसकी कॉर्निया दूसरे को अतीया के तौर पर देना दुरुस्त है?

उत्तरः अगर आँख देने वाले को नुक़्सान न हो या कार्निय के देने से बची आँख को नुक्सान न पहुंच रहा हो तो एक आँख का कॉर्निया अतीया के तौर पर दिया जा सकता है। लेकिन माहिर मुस्लिम तबीब की इजाज़त ज़रूरी है वरना जाइज़ नही है। (अल फिक्हुल इस्लामी 2609/4)

प्रश्नः आज कल इन्सानी दूध का बैंक हमारे देश हिन्दोस्तान में भी काइम होने लगा है और उसकी खरीद व फरोख़्त होने लगी है क्या किसी मुसलमान के लिए इसकी खरीद व फरोख़्त जाइज़ है? क्या शीरख्वार (दूध पीने वाले) बच्चे को यह दूध पिलाना दुरुस्त है? जब कि उससे दूध के रिश्ते का मसअला भी पैदा होगा और दूध के रिश्ते से रिश्ता हराम होने का शुब्हा भी पैदा होगा?

उत्तरः इसमें कोई शक नहीं कि माँ का दूध बच्चे के लिए सबसे जियादा मुफीद है अगर किसी बच्चे को जानवर या डिब्बे का दूध रास न आ रहा हो और डाक्टर ने औरत ही का दूध तज़वीज़ किया हो, और माँ को दूध उतर न रहा हो और ना ही दूध पिलाने वाली दायी मिल रही हो तो इस सूरत में इन्सानी दूध खरीदना दुरुस्त होगा, उजरत पर दूध पिलाने की इजाजत इस्लामी शरीअ़त में वाज़ेह तौर पर मौजूद है, इस सूरत में जिस औरत का दूध बच्चे को दिया जा रहा है उस औरत और बच्चे का रिकार्ड रख लेना जरूरी है ताकि दूध पीने से जो रिश्ता हराम हो जाता है वह मालूम रहे और अगर यह मुमकिन न हो सका और रिकार्ड न रह सका बल्कि अगर बच्चे ने दूध पीने की मुद्दत (दो वर्ष की आयु तक) में दूध पिया और निकाह के वक्त दूध पीने के रिश्ते से हराम होने का शुब्हा हो गया तो इस सूरत में निकाह दुरुस्त होगा सिर्फ शक व शुब्हे के सबब निकाह नाजाइज़ न होगा। बेहतर यही है कि बच्चों को इस किस्म के दूध पिलाने से बचाया जाय, जिसमें दूध देने वाली औरत की पहचान मौजूद न हो।

(फतावा हिन्दीया 345/1)

❖❖❖

वक्त का सबसे बड़ा महाज
(मोरचा, युद्ध अस्थल सीमा)

—मौलाना सय्यद मुहम्मद हम्ज़ा हसनी नदवी

इस वक्त दुन्या तरक़्क़ी की राह पर जिस तेज़ी से चल रही है चाहे वह तालीमी (शैक्षिणक) तरक्की हो या माद्दी तरक्की लेकिन उस मुकाबले और तरक्की के दौर में हमारी मिल्लते इस्लामिया ने जो पहले हर कौम से आगे थी अब सुस्त रवी को अपना लिया है जब की इस वक्त मिल्लते इस्लामिया को हजारों किस्मों के चैलंजों का सामना है अ़कीदा (इस्लामिक विश्वास) के महाज पर भी और माद्दी महाज पर भी लेकिन हमारा हाल यह है कि न हम अ़कीदा को मजबूत और महफूज बनाने पर तैयार हैं और न माद्दी चैलंज का सामना करने को बल्कि हमारी अक्सरीयत तो इन खतरों और चैलंजों से आशना (परिचित) भी नहीं है।

इस वक्त सबसे बड़ा महाज यह है कि हमारी आइन्दा और मौजूदा नस्ल मुसलमान रह जाये न सिर्फ एतिकादी इरतिदाद (इस्लामिक विश्वास की प्रतिकूलता) से बल्कि जेहनी, फिक्री और तहजीबी इरतिदाद (इस्लाम विरोध) से महफूज रह जाये और उस राह में सबसे बड़ी ज़िम्मेदारी उलमा की है कि वह अपने को खतरे के मुकाबले के लिए तैयार करें, और जिस तरह अस्लाफे किराम (पूर्वजों, महा पुरुषों) ने कुरबानियाँ दी हैं उनके नक्शे कदम पर चलते हुए दुन्यावी ऐश व आराम से सर्फे नज़र करके इस महाजे जंग पर कदम जमाएं और गाँव—गाँव, शहर—शहर, महल्ला महल्ला मदारिस काइम करें जिन में शबीना दरजात भी हों ताकि अस्री स्कूल में तालीम हासिल करने वाले बच्चे फारिग वक्त में उन मकातिब में जरूरी दीनी तालीम हासिल कर सकें और अस्री स्कूल में जो जहर उनके दिल व दिमाग में भरा जा रहा है तिरयाक उनको मिल सके।

दूसरी जिम्मेदारी हमारी माँ बहनों की है कि वह उस बात की फिक्र रखें कि उनकी औलाद कहीं इस्लाम से दूर तो नहीं हो रही है? कहीं उनमें अ़कीदे का बिगाड़ तो नहीं पैदा हो रहा है? कहीं उनके दिल व दिमाग में कुफ्र शिर्क का जहर तो सरायत नहीं कर रहा है? हम अपने बच्चे की मामूली से मामूली जरूरत और बीमारी की फिक्र करते हैं, अगर बच्चे को चोट लग जाये तो फौरन डाक्टर के पास जाते हैं और इन्जेक्शन लगवाते हैं कि जहर न फैल जाये लेकिन उसकी फिक्र नहीं रखते कि बच्चे के दिल व दिमाग में जो बद अकीदगी, का जहर फैल रहा है उसका

शेष पृष्ठ .....29...पर

देवनागरी लिपि में उर्दू

खालेह मुआशरे की तशकील की बुनियाद

—प्रस्तुतिः राशिदा नूरी

—मौ0 सै0 मु0 वाज़ेह रशीद हसनी नदवी

मौजूदा दौर में माद्दियत के ग़ल्बे की वजह से इन्सानियत को जो नुक़्सानात हो रहे हैं, उनमें पहला नुक़्सान ये है कि इन्सान की ग़ैरत व हमीयत ख़त्म हो रही है क़वानीन व ज़वाबित की ख़िलाफ़ वर्ज़ी और इन्सानी क़दरों की पामाली हो रही है। मौजूदा दौर में इन्सान की ज़ेहनियत ये बन गयी है कि अपनी इज़्ज़त व ग़ैरत को दाँव पर लगा कर माल कमा लेता है तो अपने आपको बड़े फाइदे में गिनता है इसलिए कि उसका ख़्याल है कि माल तमाम उयूब और नक़ाएस से पाक कर देता है। इसी माद्दी ज़ेहनियत की वजह से आज इन्सान इज़्ज़ते नफ़्स, शराफ़ते इंसानी, गैरत व हमीयत, हुकूक की पासदारी के शऊर व एहसास से बेगाना और ख़ैर व शर के दरमियान फ़र्क़ करने की सलाहियत से महरूम हो गया है। उसके नज़दीक सूदो ज़ियां, नफ़ा, नुक़सान, इज़्ज़त व शराफत और क़दरो मंज़िलत का पैमाना सिर्फ माद्दी व इक़्तिसादी तरक्की और खुशहाली है। ख़्वाह उस तरक्की के उसूल में दीन व अख़्लाक़ और इन्सानी क़दरों का जनाज़ह ही निकल जाये।

माद्दी दुनिया में पनपने वाली ये ज़ेहनियत इस हद तक पहुँच चुकी है कि आज का मुहज़्ज़ब इन्सान अपने मआशी मेअयार की बुलन्दी के लिए हर चीज़ को कुरबान कर देने के लिए तैयार है, ताकि उसे चन्द लम्हों का ऐश हासिल हो जाये, जिसके लिए वह रात दिन एक कर देता है, इस माद्दी दुनिया में फ़ख़्रो मुबाहात, ऐशो इशरत, और लज़्ज़तो मसर्रत के मसाइल हासिल करने के लिए तन मन धन की बाज़ी लगाई जा रही है। इसकी वजह ये है कि माद्दी इन्सान को सिर्फ वही शख़्स दिखाई देता है, जो उससे ज़ियदा आ़ला और उससे ज़ियादा मालो मन्सब वाला है। लेकिन वह उन अस्बाबो व वसाइल को नहीं देखता जिनके ज़रिए सामने वाले ने इस बुलन्द मक़ाम को हासिल किया है, और न ज़िन्दगी में उसके अख़्लाक़ व मुआ़मलात और सुलूक को देखता है।

मौजूदा दौर में माद्दियत पसंदी की वजह से हुकूक के इस्तेहसाल और अख़्लाक़ी जराइम में रोज़ ब रोज़ इज़ाफ़ा होता जा रहा है, अवाम में जितना मद्दियत पसंदी का रुज्हान ग़ालिब आ रहा है, उतना ही वह ज़ेहनी इन्तिशार, बेचैनी, महरूमी और बद बख़्ती का शिकार हो रहे हैं, माल व दौलत की बहुतात ने मालदार शख़्स में बद ख़ुल्क़ी, बद मिज़ाजी और बद सुलूकी पैदा कर दी है, और उसकी हिर्स व हवस में

मजीद इज़ाफ़ा कर दिया है। इसी तरह माद्दी उलूमो फुनून की कसरत ने मुआशरे में नफ़अ अंदोज़ी, जाल साज़ी, धोका धड़ी, हराम खोरी, लज़्ज़त कोशी, शराब नोशी और किमार बाज़ी जैसी मुहलिक बीमारियां पैदा कर दी हैं, दुन्यावी तरक़्क़ी ने जराइम की अंजाम दही के लिए नये नये वसाइल तलाश कर लिए हैं, अस्हाबे इक़्तिदार बज़ोरे कुव्वत अपने मुजरिमाना मन्सूबों को नाफिज़ कर रहे हैं, लोगों के दिलों और ज़ेहनों में अपनी दहशत और रोब बिठा रहे हैं, उनके हुकूक का इस्तिहसाल कर रहे हैं उनकी आज़ादियां सल्ब कर रहे हैं, और उनके जाइज़ मुतालबात पर उनको पाबंदे सलासिल किया जा रहा है, और हौलनाक सज़ाऐं दी जा रही हैं, उसके लिए तरग़ीब व तरहीब और ज़हन साज़ी के सारे वसाइल इस्तेमाल किये जा रहे हैं, इस रुजहान की वजह से ज़ालिम मज़लूम और मज़लूम ज़ालिम बन गया है, इस्तिहसाल का नाम हुसूले हक़ और ज़ुल्म का नाम इस्लाह हो गया है, और माल कमाने की होड़ लग गई है, हत्ताकि मालदार तब्क़े में भी कसबे माल की रेस जारी है, जिसके नतीजे में तरक़्क़ी याफ़ता तब्क़े में हराम खोरी, मक्कारी, रिश्वत और सूद खोरी आम हो गई है, जिसकी फितरत इन बुराइयों को कुबूल करने के बजाए अल्लाह के हुदूद पर क़ाइम व दाइम रहना चाहती है, और हालात भी ऐसे शख्स के लिए संगीन हो गये हैं, जिसका ज़मीर उस को माद्दियत को अपनाने की इजाज़त नहीं देता, बल्कि वह माद्दी तौर तरीक़ों से हट कर ज़िन्दगी गुज़ारने का ख्वाहां है, चुनांचे ऐसे शख्स को अपने हुकूक के हुसूल और अपनी जीस्त को खुशगवार बनाने के लिए ज़िन्दगी के हर मोड़ पर मुश्किलात व मसाइब का सामना करना पड़ता है।

इस पर तअज्जुब किसी को नहीं होगा, अगर ये माद्दी रुज्हान इस मग़रिबी तहज़ीब के मुआशरे में आम हो जाये जिसकी बुन्याद माद्दियत है, जिसकी रूह अख़्लाक़ी अक़्दार से बग़ावत है, जिसमें अच्छाई और बुराई के दरमियान कोई फ़र्क़ ही नहीं, बल्कि इस तहज़ीब के अलमबरदार तो यह कहते हैं कि अच्छाईयां और बुराईयाँ, ज़माना, हालात माहौल और लोगों की ख्वाहिशात के मुताबिक़ बदलती रहती हैं, लिहाज़ा इस तहज़ीब में न तो मुसल्लमात ही हैं और न ही अक़्दारे रिवायात, बल्कि इसकी बुन्याद मुसल्लमात से बग़ावत और हर नई चीज़ को गले लगा लेना है, लेकिन हैरत व तअ़ज्जुब का मक़ाम ये है कि ज़िन्दगी का ये माद्दी रूज्हान आलमे इस्लाम में भी फैल गया है।

आलमे इस्लाम की तमद्दुनी ज़िन्दगी का अगर जायज़ा लिया जाये तो मालूम होगा कि आलमे इस्लाम भी मग़रिब के नक्शे क़दम पर चल रहा है, इसका सबब निज़ामे तालीम व

तरबियत है, और वह अस्हाबे इक़्तिदार हैं, जो मग़रिबी माहौल के परवरदा हैं, और यह उन माद्दीय मुतमद्दिन मुल्कों की जिन्दगी को इख़्तियार कर रहे हैं, जो आला अक़्दार से आरी हैं, और ये उन तमाम लोगों को कुचल रहे हैं जो मुआशरे को सही इन्सानी खुतूत पर तामीर के लिए कोशां हैं, और समाज में खैर व भलाई और अम्न व अमान आम करने के लिए कोशिश कर रहे हैं, ये माद्दी रूज्हानात वह जराये इब्लाग़ फैला रहे हैं, जिनकी पहुँच घर–घर हो चुकी हैं, बल्कि हर फरदे बशर उनकी जद में है, जिसकी वजह से इस्तिहसाली और माद्दी रूज्हान तेजी से आम हो रहा है, और आज इस्लामी ममालिक में जुल्मो जौर और बद अहदी व बद खुल्की जैसी ख़तरनाक बुराईयां जन्म ले रही हैं, जो आलमे इस्लाम की परेशानी पर बद नुमां दाग साबित हो रही हैं, हालांकि अल्लाह तआला ने आलमे इस्लाम को आला इस्लामी तालीमात से सरफ़राज़ फरमाया है, और उसकी तारीख़ शरीफाना इंसानी ज़िन्दगी, आला अख़्लाक़, मिसाली मुआमलात, ईसारो क़ुरबानी हमदर्दी व ग़मख्वारी और फिदाइयत के शानदार नमूनों से भरी पड़ी है, उसके पास खुशगवार पाकीज़ा ज़िन्दगी गुज़ारने का अजीम सरमाया है, जो खुद दूसरों के लिए बाइसे तक़लीद है, आलमे इस्लाम को तो मज़लूमों और मसाइब से दोचार लोगों का मलजा व मावा होना चाहिए जो तमाम खराबियों और बुराइयों से पाक व साफ़ हो जिसमें ज़िम्मेदारी का एहसास जांगुज़ीं हो, जिसमें हुकूक की पासदारी हो जिसमें बहैसियत इंसान, इंसान की इज़्ज़त व शराफ़त महफ़ूज़ हो, लेकिन अफसोस सद अफसोस की मौजूदा तहजीब व तमद्दुन की नक़्काली और पुरऐश माद्दी ज़िन्दगी के वसाइल की कसरत ने आलमे इस्लाम से ये कीमती मौक़ा छीन लिया है आज मुआशरे में वह तमाम मुहलिक अख़्लाक़ी बीमारियां और बुराइयां मौजूद हैं, जो माद्दी मुआशरे में पाई जाती हैं, और जो मसाइल ग़ैर इस्लामी मुआशरे में पाये जाते हैं, वह इस्लामी मुआशरे में भी दाख़िल हो गये हैं इसी तरह मग़रिबी समाज के पैदा करदा फकरो फ़ाक़ा, जुल्मों जहल और पसमांदगी भी आम हो गयी है।

आलमे इस्लाम में इस्तिहसाली ज़ेहनियत और माद्दी रूज्हान छा गया है हुकूमती इदारों और ज़िन्दगी के दीगर शोबों में यह ज़ेहनियत साफ नज़र आती है, लापरवाही गफ़लत और मसलेहत पसंदी का मुशाहिदा होता है ज़िम्मेदारों को कोई शर्म और हिचकिचाहट नहीं होती और अगर माली फायदा न हो तो मसाइल को पसे पुशत डाल देते हैं, ये सूरते हाल ग़ैर इस्लामी मुआशरे से मुख़्तलिफ नहीं जो भी इस्लामी मुल्कों का सफर करता है, वह आलमे इस्लाम और दीगर मुल्कों के

दरमियान अख़्लाक़ो किरदार, ऐशो इशरत और हुक्काम अम्न व अमान के ज़िम्मेदार और अफसरान के रवय्ये में कोई फर्क़ नहीं पाता, वह तो सिर्फ एक तूफाने बला खेज़ देखता है जिसनें बग़ैर किसी तफ़रीक़ के मशरिक़ो मग़रिब को अपनी लपेट में ले लिया है। अगर आलमे इस्लाम के ज़िम्मेदार इस्लामी अख्लाक़ और अख़्लाक़ी मुआमलात के मुख़्तलिफ़ नमूने दुन्या के सामने पेश करते तो वह उन मुर्शिदीन व मुस्लिहीन के मक़ाम तक पहुंच जाते जिन्होंने घटा टोप तारीकी में दबी कुचली इंसानियत की मसीहाई व रहनुमाई की आज भी मिल्लते इस्लामिया ऐसे अफ़राद से खाली नहीं है, लेकिन मिल्लत के अफराद में जुरअ़तो हिम्मत और इस्तिक़लालो सबात की कमी है और सही दीनी व दावती तरबियत का फुक़दान है; जरूरत इस बात की है कि उनकी सही तरबियतो रहनुमाई और उनकी हौसला अफज़ाई की जाये इन एहसासात का इज़हार यूरोप में बसने वाले उन लोगों ने खास तौर पर किया है, जो इस्लामी तालीमात का मुताला करके मुशर्रफ़ ब इस्लाम हुए, फिर जब उन्होंने इस्लामी मुल्कों का सफर किया ताकि वहां के खुशगवार व पाकीज़ा माहौल और रब्बानी फ़िज़ा में अपनी ज़िन्दगी गुजार सकें तो उन्हें बहुत अफसोस और मायूसी हुई उनको बड़ा सदमा हुआ कि यहाँ भी मगरिबी कल्चर व सक़ाफ़त की तमाम बुराईयां मौजूद हैं इसी तरह मुस्लिम खानदानों में शादी कर के उन्हें इसका तल्ख़ तर्जुबा हुआ।

अगर इस्लामी अख़्लाक़ और दीनी अक़्दार पर ज़िन्दगी की तअ़मीर का काम किया जाये तो उस अमल का किसी मफ़ाद से टकराव नहीं होगा और न ही किसी हुकूमत या निज़ाम से कोई इख़्तिलाफ़ होगा, ज़रूरत इस बात की है कि तालीम याफ़ता तब्क़ा और नौ जवानों को उनकी ज़िम्मेदारियों का एहसास दिलाया जाये, यह अमल एक तामीरी और मुसबत इक़दाम होगा और इस्लामी तन्जीमें और इदारे इस अमल को अपनी सरगर्मियों का हिस्सा बना सकती हैं और यह दीनो मिल्लत की अच्छी ख़िदमत होगी और यह अमल सियासी जिद्दोजोह्द इक्तिदारे हुकूमत के हुसूल और सियासी जिन्दगी में हिस्सादारी से ज्यादा अहम है, जैसा कि कुरआन करीम में इस तरफ इशारा किया है, (चाहिए कि तुममें कुछ ऐसे भी लोग हों, जो दीन को खूब अच्छी तरह समझें और फिर जब यह लोग अपनी क़ौम की तरफ लौटें तो अपनी क़ौम को अल्लाह से डरायें, ताकि वह लोग अल्लाह से डरने वाले बन जायें)।

(सूर–ए–तौबाः 122)

इमाम सय्यद अहमद बिन इरफान शहीद रह0 ने अल्लाह के रास्ते में जिहाद किया, हत्ता की खुदा वन्दे कुद्दूस ने उन्हें शहादत नसीब फरमाई, उन्होंने एक इस्लामी हुकूमत क़ायम की और

इस्लाहे मुआशरा के लिए अपनी तमाम कोशिशों को सर्फ कर दिया, वह जिहाद में मशगूलियत के बावजूद भी मुस्लिहीन और मुर्शिदीन की जमाअ़तों को मुआशरे की इस्लाह के लिए भेजते थे, चुनांचे उनके मुस्लिहीन और मुर्शिदीन हिन्दुस्तान के मुख्तलिफ़ गोशों में फैल गये, और ज़ियादा से ज़ियादा दीनी मदारिस का क़याम अ़मल में आया।

लाखों अफ़राद की ज़िन्दगी में इन्क़िलाब आया, उनके साथियों के हाथों पर हजारों अफराद ने इस्लाम क़बूल किया, और सच्ची तौबा करके दाइ–रए– इस्लाम में दाखिल हो गये, और मुआशरे में इस्लामी तअ़लीमात और दीनी व शरई मुआमलात का खूब रवाज हुआ। मौजूदा दौर भी ऐसे मुस्लिहीन व मुर्शिदीन का तक़ाज़ा कर रहा है जो तग़य्युर पज़ीर मुआशरती हालात का डट कर सामना करें, और वह मग़रिबी व माद्दी रूज्हानात को बदलने के लिए इस्लामी अख़्लाक़ व किरदार का आला नमूना पेश करें।

मौजूदा वक्त में मुआशरे में इस्लामी बुन्यादों पर तामीर का काम मिल्लत के दूसरे कामों से ज्यादा अहम और फौरी तवज्जो का तालिब है इसलिए कि मुआशरा हर कोशिश की बुन्याद और उसका नुक़्तए आग़ाज है, और इस्लामी बुन्यादों पर इस्लामी मुआशरे की इस्लाह किये बग़ैर कोई भी कोशिश कभी भी समर आवर नहीं हो सकती।

मौजूदा हालात ऐसी तहरीक के मुतक़ाज़ी हैं, जो इन तमाम समाजी अमराज़ का कलअ़ कमअ़ कर सके, जो हक़ीक़त में इस्लाम की रूह और दीनी तअ़लीमात के खिलाफ हैं, चुनांचे अहादीसे मुबारका में भी इन तमाम मुआशरती अमराज़ और खराबियोंको बिल्कुल वाज़ेह तौर पर बयान कर दिया गया है, लिहाजा उलमाए उम्मत को इस तरफ तवज्जो करने की बहुत जरूरत है, ताकि इस्लामी मुआशरा इन्फिरादी व इज्तिमाई ज़िन्दगी में दूसरी क़ौमों के मुआशरे से मुम्ताज़ हो, मजीद ये कि इस इस्लाही और दावती काम के लिए निज़ामे हुकूमत में दखल अंदाजी की ज़रूरत नहीं, बल्कि ज़रूरत इस बात की है कि इस्लाही दावत का काम करने वालों के रवय्ये और तरीक़े कार में तब्दीली आ जाये और उनके अंदर जिम्मेदारियों का एहसास व शुऊर पैदा हो जाए।

कठिन शब्दों के अर्थ–

तशकील= निर्माण। गैरत= आत्म सम्मान। हमीयत= स्वाभिमान। उयूब=विकार। नक़ाइस=खराबियां। ख़ैर= भलाई। शर= बुराई। सूद= लाभ। जियां=हानि। मुहज्ज़ब = सभ्य। फख्र= गर्व। मुबाहात= गर्व प्रदर्शन। क़िमार बाजी= जुआ खेलना। अस्हाबे इक़्तिदार= सत्ता वाले लोग, शासक।

शेष पृष्ठ .....32....पर

एलाने मिलकियत व अन्य विवरण फार्म-4 नियम-8

प्रकाशन का स्थान	—	मजलिसे सहाफ़त व नशरियात, नदवतुल उलमा, बादशाहबाग, लखनऊ
प्रकाशन अवधि	—	मासिक
सम्पादक	—	डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी
राष्ट्रीयता	—	भारतीय
पता	—	अहाता दारुल उलूम, नदवतुल उलमा, लखनऊ
मुद्रक एवं प्रकाशक	—	अतहर हुसैन
राष्ट्रीयता	—	भारतीय
पता	—	21—अदनान पल्ली निकट, हिरा पब्लिक स्कूल, रिंग रोड, दुबग्गा, डाक घर, काकोरी, लखनऊ
मालिक का नाम	—	मजलिसे सहाफ़त व नशरियात, दारुल उलूम नदवतुल उलमा, लखनऊ

मैं, अतहर हुसैन प्रमाणित करता हूँ कि उपरोक्त विवरण मेरे विश्वास व जानकारी में सही है।

वक्त का सबसे बड़ा..... इलाज किया जाये उसकी तरफ से बिलकुल अंजान बन जाते हैं आखिर उसका अंजाम क्या होगा हम अपने दिल पर हाथ रख कर सोचें कि क्या यह जान बूझ कर अपने बच्चे को दोज़ख़ की आग में फेंकना नहीं है?

आइये आज हम इस बात का अहद करें कि इस अहम महाज पर सीना सिपर रहेंगे और अक़ीदा और ईमान की सलामती के लिए हर किस्म की कुर्बानी देंगे, फिर अल्लाह तआला हमारी मदद करेगा और हमारी आइन्दा नस्लों और हमारे जिगर के टुकड़े इन्शाअल्लाह ईमान के साथ ज़िन्दा रहेंगे अल्लाह और उसके रसूल हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की इताअत और महब्बत के साथ जिन्दा रहेंगे। आमीन

कठिन शब्दों के अर्थ—

महाज= सामने, युद्ध अस्थल सीमा, मोरचा। नक़्शे कदम= पग चिन्ह। नक़्शे कदम पर चलना= अनुकरण करना। ऐश व आराम= भोग विलास। सर्फे नज़र= अनदेखी। मदारिस= मदरसे, स्कूल। शबीना= सायंकालिक। अस्री स्कूल= आधुनिक स्कूल, सरकारी स्कूल। मकातिब= स्कूल, मदरसे। तिरयाक= विष औषधि। कुफ्र= अनीश्वरवाद, नास्तिकता। शिर्क= अनेकेश्वरवाद। सरायत= प्रवेश करना। रुजुअ़ करना= सम्पर्क करना, लौटना। अ़हद= प्रण। सीना सिपर= सीने को ढाल बनाना, मुकाबले के लिए जम जाना। इताअत= आज्ञापालन। □□

सच्चा राही चौदहवें वर्ष में

—इदारा

सच्चा राही ने तेरह वर्ष पूरे कर लिए और इस अंक से चौदहवें वर्ष में प्रविष्ट हो गया, इस लम्बे समय में सच्चा राही के पृष्टों पर जो भूल चूक हुई हो अल्लाह उसे पाठकों को भुला दे और सम्पादक को क्षमा कर दे और जो लाभ प्रद बातें लिखी गई हों वह पाठकों को याद रहें, उनसे वह लाभान्वित हों और अल्लाह तआला उन्हें स्वीकृत प्रदान करे।

सच्चा राही का सदैव यह प्रयास रहा है कि उम्मत में एकता पैदा हो तथा देश भाईयों में परस्पर प्रेम पैदा हो भाईचारे का वातावरण हो सब शान्ति तथा सम्पन्नता के साथ सुखी जीवन बिताएं, समाज की बुराईयां दूर हों, अत्याचार, पक्षपात समाप्त हो, शैतान ने जो उग्रवाद, आतंकवाद की आँधी चला रखी है जिससे सारा संसार विचिलित, व्याकुल और दुखी है वह समाप्त हो। प्रयास हमारा कार्य है, सफलता प्रदान करना अल्लाह के अधिकार में है।

मैं अपने प्रिय पाठकों से इस बात की अनुमति चाहूंगा कि केवल कवर पृष्ठ से जो संदेश अपने पाठकों तथा प्रिय देश वासियों तक केवल इस वर्ष में कविताओं द्वारा पहुंचाया है, उन का अर्थ आप की सेवा में पुनः भेंट करूँ।

जाना उसी के पास है–

इस संसार में जब भी कोई कठिनाई अथवा आपत्ति आए तो धैर्य से काम लेना चाहिए और अल्लाह तआला को ध्यान में ला कर यह कहना चाहिए कि "हम तो अल्लाह ही के हैं और उसी की ओर लौट कर जाना है" और यह सोचना चाहिए कि हम को जहां जाना और जहां सदैव रहना है वहां के लिए हमने क्या तैयारी की?

फ़िक्र कर उस ज़िन्दगी की–

हम अपनी आँखों से देखते हैं कि जो पैदा होता है उसकी ज़िन्दगी एक दिन समाप्त हो जाती है तो फ़िर हम को इस ज़िन्दगी पर घमन्ड न करना चाहिए, हम को ईशदूतों द्वारा ज्ञात हुआ कि अगले शास्वत जीवन में या तो जहन्नम का दुख है या जन्नत का सुख अतः हम को चाहिए कि ईशदूतों द्वारा अपितु अन्तिम दूत हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम द्वारा बताए मार्ग को अपनाकर जन्नत का सुख पाने का प्रयास करें।

सत्य हमें फैलाना है–

हमारे पास अन्तिम दूत हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम द्वारा पहुंचाया हुआ सत्य ज्ञान है हमको उस सत्य ज्ञान को घर घर पहुंचाना है और जो हमारे भाई सत्य ज्ञान से अपरिचित होकर

सत्य राह से भटके हुए हैं उनको सत्य ज्ञान दे कर सत्य मार्ग पर लाना है।

प्रेम डगर पर लाना है–

हमारे जो भाई हमसे विमुख हो गये हैं उनको प्रेम का संदेश पहुंचाना है इस प्रयास में उनकी कड़वी बातें सहन करते हुए उनके पीछे लग कर उनको मानवता का प्रेम सिखा कर प्रेम डगर पर लाना है ताकि देश में प्रेम भाव पैदा हो।

हम ही राइद हैं–

हम मुसलमानों की यह ज़िम्मेदारी है कि हम जहां भी रहें वहां भलाई फैलाएं तथ बुराई मिटाएं हमको अल्लाह तआला ने इस संसार में राइद व क़ाइद अर्थात सत्य मार्ग का मार्गदर्शक और नायक बनाया है।

हम पर फ़र्ज़ है–

हमारा कर्तव्य है कि सर्व प्रथम अपने को सुधारें फिर समाज सुधार का प्रयास करें इस प्रयास में कोताही न करें और दूसरों से बात करते समय इसका प्रयास करें कि सुनने वाला हमारी बातों को सत्य जाने। हमारे लिए यह बात अनिवार्य है कि हम सदैव सत्य मार्ग पर रहें और दूसरों तक सत्य पहुंचा कर उनको सत्य मार्ग पर लाएं।

हज मुबारक–

इस अंक के प्रकाशन के समय हमारे ख़ुशनसीब भाई हज के सफ़र पर निकल रहे थे उस अवसर पर यह दुआ प्रकाशित की गई: जो लोग हज के लिए निकल रहे हैं अल्लाह तआला उनका हज क़बूल फ़रमाए और उनके लिए यह हज मुबारक हो, हाजी हज़रात हज के मुक़द्दस मक़ामात पर जो दुआएं करें अल्लाह तआला उनको क़बूल करे और उनकी दुआओं की बरकत से मुल्क में अम्न व अमान हो और मिल्लत में इत्तिहाद हो और लोगों के दिलों से कीना, कपट निकल जाए।

शुहदा ज़िनदा हैं–

यह अंक मुहर्रम से सम्बन्धित था अतः कर्बला के शहीदों को सामने रखते हुए क़ुर्आन मजीद में शहीदों के बारे में जो कुछ आया है उसको याद दिलाया गया, पवित्र क़ुर्आन में वर्णित है कि "शहीदों को मुर्दा मत कहो वह ज़िन्दा हैं" निःसंदेह हदीस में आया है कि हज़रत हमज़ा रज़ि0 शहीदों के सरदार हैं परन्तु हज़रत हुसैन रज़ि0 का दर्जा भी शहीदों में ऊँचा है।

शिक्षाएं–

सुनो इस्लाम का आदेश है कि वैध कमाई खाओ नौकरी करो चाहे मज़दूरी करो उसमें काम चोरी न करो लगन से काम करो घूस न लो अपितु मेहनत का जो बदला मिले उसी को घर लाओ और उसी से घर चलाओ जिस बात को तुम सत्य समझो उस को अपने जीवन में अपनाओ और उस सत्य को दूसरों तक भी पहुंचाओ ताकि समाज शान्तिमय हो जाए।

रबीउल अव्वल–

इस अंक का सम्बन्ध रबीउल अव्वल माह से था

अतः उसकी अनुकूलता से कहा गया:

रबीउल अव्वल मास में प्यारे नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का जन्म हुआ था और इसी मास में आपका देहान्त भी हुआ था अतः इस मास के आने पर यह दोनों अवसर याद आते हैं और हम आप पर दुरूद व सलाम पढ़ते हैं और कहते हैं कि ऐ अल्लाह अपने नबी पर रहमत उतार और सलामती उतार तथा इस रहमत व सलामती में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की आल, अज़वाज़ और समस्त सहाबा को सम्मिलित कर।

कल्मा पढ़ो–

इस्लाम उन्नति करने से नहीं रोकता चाहे डॉक्टर बनो चाहे इन्जीनियर बनो चाहे वैज्ञानिक बनो चाहे जितनी उन्नति करो परन्तु अपने ख़ालिक़ व मालिक को ना भूलो।

प्रिय पाठको! सच्चा राही का सदैव यही प्रयास रहा है कि वह अपने लेखों द्वारा इस्लामी अख़्लाक़ फैलाए और अपने भाइयों तक मानवता का संदेश पहुंचाए अपने देशवासियों में स्वच्छ वातावरण बनाए इसी उद्देश्य से यह पत्रिका निकाली गई थी, वित्तीय लाभ इसका उद्देश्य न पहले रहा है न अब है आरम्भ ही से यह पत्रिका माली घाटे से प्रकाशित की जाती रही है इधर कई वर्षों से लगभग एक लाख वार्षिक घाटा चल रहा है हम अपने पाठकों से अनुरोध करते हैं कि वह इसके ग्राहक बढ़ाएं तो किसी हद तक घाटे में कमी आ सकती है, अल्लाह तआला हमारे पाठकों के दिलों में यह बात उतार दे और वह अपने सच्चा राही के सहयोग पर तत्पर हो जाएं। □□

स्वालेह मुआशरे की.....

इक्तिदार= सत्ता। पाबन्दे सलासिल= ज़ंजीरों में बंधे हुए क़ैदी। इस्तेहसाल= शोषण। ज़ीस्त= जीवन। मुसल्लमात= स्वीकृत प्राप्त नीतियां। अक्दार= उत्तम नीतियां। रिवायात= नैतिक प्रथाएं, नीतियां, कथन। मुतमद्दिन= सभ्य। ज़राये इबलाग़= सूचना प्रसारण के साधन, मीडिया। सरफराज फरमाया= प्रदान किया। मलजा व मावा= ठिकाना, आश्रय स्थान। तूफान= आँधी। बलाखेज = अपत्तिजनक, विपत्तिजनक। फुक्दान= न होना, नास्ति। मुसलिहीन= सुधारक। मुरशिदीन= निर्देशक। क़ला क़मा करना= उखाड़ फेकना, मिटा देना। स्वालेह= स्वच्छ। मुआशरा= समाज। □□

अंतर्राष्ट्रीय समाचार.....

राम देव ने कहा कि साधू पाप करते हैं तो उन्हें सामान्य लोगों को दिए जाने वाले दण्ड से अधिक दण्ड दिया जाना चाहिए।

उन्होंने कहा कि धर्म और राज सत्ता में काफी पतन हुआ है इसमें सुधार की जरूरत है। रामदेव ने एक अन्य प्रश्न के जवाब में कहा 'मैं सीधे तौर पर राजनीति में प्रवेश नहीं करूंगा। □□

नशा एक सामाजिक व पारिवारिक बुराई

—अवधेश कुमार पाण्डे एम0एससी0

यह एक मानसिक बीमारी है, इस बीमारी की गिरफ्त में आने के बाद मनुष्य मानसिक रूप से कमजोर व भावनात्मक रूप से अस्थिर हो जाता है। ऐसे व्यक्ति को पारिवारिक, सामाजिक सहयोग और सम्मान से मानसिक रूप से स्वस्थ्य किया जा सकता है। कभी—कभी ऐसे व्यक्ति को चिकित्सकीय सलाह की भी जरूरत पड़ती है।

नशा के प्रकार—

यह मुख्यतः चार प्रकार का है, इसमें से हर नशा मनुष्य का आर्थिक, शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक एवं सामाजिक नुकसान करता है।

1. तम्बाकू व उससे बने खाने वाले पदार्थ— तम्बाकू, गुटखा, पान, दोहरा इत्यादि।

शारीरिक नुकसानः मुंह में लाल व सफेद दाग का होना, मसूड़ों से खून आना व दांत खराब होना, अल्सर होना, मुंह, जीभ, होंठ, गला, पेट व अन्य तरह के कैंसर होना, पाचन क्रिया ठीक न रहना, रक्तचाप का बढ़ना, हृदय रोग इत्यादि।

2. तम्बाकू से बने धुआं पीने वाले पदार्थ बीड़ी, सिगरेट, हुक्का चिलम इत्यादि।

शारीरिक नुकसान— सांस का रोग होना, कफ आना, अस्थमा होना, पूर्णरूप से शरीर का धीरे—धीरे कमजोर होना, खांसी आना, फेफड़ों गले व मुंह का कैंसर होना, हृदय रोग, ब्लड प्रेशर इत्यादि।

3. शराब—

कच्ची शराब, बियर, रम, वोडका इत्यादि में एथाएल अल्कोहल होता है।

शारीरिक नुकसानः पाचन क्रिया का बिगड़ना, मानसिक रूप से कमजोर होना, काम में मन न लगना, आत्मबल की कमी होना, भावनात्मक रूप से अस्थिर होना, घर व समाज में कलह व झगड़े होना, लीवर व किडनी खराब होना, लिवरसिरोसिस होना, ब्लड प्रेशर बढ़ना, पीलिया होना, रोड पर दुर्घटना होने की सम्भावना इत्यादि।

4. चरस, अफीम, भांग, मेडिसिन इत्यादि—

इसके शरीर के ऊपर गंभीर परिणाम होते हैं।

आर्थिक नुकसान— प्रतिदिन तम्बाकू उत्पादों का सेवन करने वाला व्यक्ति रू0 10 से रू0 20 तक अवश्यक खर्च करता है। शराब व अन्य नशा करने वाला व्यक्ति रू0 50 से रू0 150 तक प्रतिदिन खर्च करता है। यदि आप नशा करते हैं—

तम्बाकू उत्पाद पर खर्च—

मासिक रू0 15x30 दिन= रू0 450/-

वार्षिक रू0 450x12=5400/-

लगभग 40 वर्ष रू0 5400x40=216000/-

शराब व अन्य नशा पर खर्च—

मासिक रू0 100x30 दिन= रू0 3000/-

वार्षिक रू0 3000x12 =36000/-

लगभग 40 वर्ष रू0 36000x40 = 144000/- इतने रूपयों की यदि बचत की जाये तो वह आने वाली पीढ़ी को मिलेगा।

नशा करने वाले हर व्यक्ति को कोई न कोई अवश्य स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्या हो जाती है। रोग के इलाज पर खर्च किये गये रूप्यों को इसमें नहीं जोड़ा गया है। यदि इससे होने वाली सिर्फ सामान्य बीमारियों के इलाज का खर्च जोड़ा जाये तो चार गुना होगा। यदि कैंसर, अस्थमा, लिवरसिरोसिस, किडनी फेल जैसी बीमारी हो जाये तो लाखों रूपये खर्च करने के बाद भी परिवार के सदस्य को बचाना मुश्किल है। असामयिक मौत होने से परिवार आर्थिक, मानसिक व सामाजिक रूप से टूट जाता है।

सामाजिक पारिवारिक नुकसान–

जो व्यक्ति नशा करता है, उसके बच्चों को नशे में पड़ने की सम्भावना 100 प्रतिशत ज़्यादा है। उस व्यक्ति के बच्चों से जो नशा नहीं करता है। आप चाहते हैं कि आपका बच्चा नशा न करे लेकिन यदि आप कर रहे हैं, तो उसके नशा करने की सम्भावना पूरी है।

परिवार व समाज के लोगों से आये दिन विवाद होते हैं। ऐसे कुछ स्वार्थी लोग नशे में विवाद कराते हैं और अपने फायदे की बात सोचते हैं।

नशे की हालत में किसी भी वाहन के चलाने से दुर्घटना होती है।

परिवार व समाज में ऐसे व्यक्ति को सम्मान की दृष्टि से नहीं देखा जाता है।

किसी भी शराबी की बात पर लोग यकीन नहीं करते हैं, जिससे उसका व्यापारिक नुकसान भी होता है। ऐसे व्यक्ति पर ग्राहक व सेठ दोनों ही विश्वास नहीं करते हैं। इत्यादि

बच्चे नशा कैसे सीखते हैं?

प्रत्येक पिता चाहता है कि उसके बच्चे नशामुक्त रहें लेकिन–

जब हमारे घर पर कोई आता है तो हम यदि नशा करते हैं, तो उसे नशा परोस कर उसका स्वागत करते हैं। मसलन तम्बाकू, पान, गुटखा, बीड़ी, सिगरेट व फिर शराब पिलाकर, उससे बातें करते हैं, इसी से उसको इज्जत देते हैं। कई बार तो बच्चे को ही नशीला पदार्थ लाने के लिए भेज देते हैं।

हम जुबान से हमेशा बच्चे से कहते हैं, नशा मत करना! यदि करते हुए सुन लेते हैं, तो उसे सजा भी देते हैं, लेकिन हम अपने कर्म से बच्चे को नशा सिखाते हैं। हम बच्चे को सिखाते हैं कि दोस्त व रिश्तेदार का स्वागत नशा परोस के ही करना है, नशा करने से मेल–जोल बढ़ता है।

कर्म द्वारा दी हुई शिक्षा, जुबान से दी हुई शिक्षा पर भारी पड़ती है। बच्चा भी बड़ा हो कर नशा करने लगता है।

बच्चे के लिए पिता आदर्श होता है। हम लोगों ने भी लगभग 90 प्रतिशत गुण व अवगुण अपने बड़ों से ही सीखा है।

मेरे जीवन में मेरी मां का, मेरे बाबा जी का व मेरे पिता जी का प्रभाव है। उन्हीं की प्रेरणा से मैं आज स्वस्थ हूं, और मेरे यह विचार हैं।

कैसे नशामुक्त हों–

दोस्तो यह बहुत ही आसान है, बस इच्छा शक्ति एवं आपके परिवार की इस कार्य के लिए सहयोग व प्रेम की जरूरत है।

सर्वप्रथम आप ईमानदारी से स्वीकार करें कि आप नशा की बीमारी से परेशान हैं एवं इस बीमारी से मुक्ति चाहते हैं।

अपने परिवार के सदस्यों से इस पर चर्चा करें, कि आप इसे छोड़ेंगे व उनसे जो भी सहयोग आपको इस कार्य में चाहिए उन्हें खुलकर बतायें।

नशा त्याग करने के बाद समाज में इसे हर्ष से स्वीकार करें कि मैं नशा करता था। अब मैं नशामुक्त अच्छा नागरिक हूँ।

इसमें कोई शर्म न करें क्योंकि जो आपने किया है वह महान कार्य है। इससे दूसरों को भी प्रेरणा मिलेगी। आपने नशा त्यागकर समाज के लिए महान कार्य किया है।

नायक अपनी गलती को स्वीकार करता है, जबकि खलनायक अपनी गलती छुपाता है, पकड़े जाने पर भीख मांगता है कि छोड़ दो–छोड़ दो।

दोस्तो नायक बनो।
गर्व करो। नशामुक्त बनो।।

बहनों, दोस्तों व प्रिय बच्चो आप सबसे मैं आवहान करता हूं कि आप सब गांव–गांव में इसका संगठन बनायें, इसे आगे बढ़ायें व अपने बच्चों को नशामुक्त रखने का संकल्प करें। हर गांव में संगठन से अधिक से अधिक बच्चों, महिलाओं को जोड़ें, जिससे बच्चों को शिक्षा मिले कि नशा करना गलत है।

नशा करने वालों से सबसे अधिक पीड़ित हमारी मातायें व बहनें हैं, मैं जानता हूं कि इस बुराई को सिर्फ हमारी मातायें व बहनें ही अपने बच्चों के साथ मिलकर खत्म कर सकती हैं। मैं अपनी बहनों, माताओं व बेटियों को इस कार्य को बढ़ाने के लिए आवाहन करता हूं। मैं नारी शक्ति एवं युवा शक्ति का सम्मान करता हूं। हमें इस बदलाव के लिए साथ चलना होगा।

मैं प्रबुद्धजनों व नशा करने वालों से भी प्रार्थना करता हूं कि आप इस कार्य से जुड़ें व अपने बच्चों के लिए नशा का त्याग करें। नशा त्याग कर इस कार्य को आगे बढ़ायें।

अन्त में मैं अपनी एक कविता पर बात समाप्त करता हूं।

नशा बेचकर लोग, अपनी तिजोरी भरने में लगे।
स्वार्थ के आगे हमें, समाज भी नतमस्तक लगे।।
अगर यूंही हम सोते रहेंगे।
बच्चे हमारे भूख से रोते रहेंगे।।
कहीं ऐसा न हो तड़पकर भूख से,
बन्दूक उठाने पर मजबूर बच्चे हमारे हों।
इन बड़े लोगों की, फिर जिन्दगी नासूर हो।।
मैं कहूंगा आपसे, अब भी समय है।
संभल जाओ, वरना मानवता ही खत्म है।।
मैं अकेला ही चला हूं, मंजिल दूर है।
आपका गर साथ मिले, तो सफलता पूर्ण है।।
दोस्तो जागो, अपनी सामाजिक जिम्मेदारी को समझें,
कुछ समय समाज को नशामुक्त बनाने के लिए दें।

❖❖❖

पैरो बना के उनका या रब बना ले अपना

कल्मा नबी का या रब मुझ तक पहुंच गया है
तेरे करम से कल्मा दिल में उतर गया है
माबूद फकत तू है दिल में बिठा लिया है
देखूं नबी को तेरे अरमान रह गया है
प्यारे नबी का अपने मुझ को दिखा दे सपना
पैरो बना के उनका या रब बना ले अपना
पढ़ता नमाज मैं हूं, कुरआन भी हूं पढ़ता
पढ़ता दुरूद मैं हूं, दिल से दुआ हूं करता
मेहनत से अपनी या रब, रोजी हलाल खाता
तेरे नबी को देखूं, रो के दुआ हूं करता
या रब नबी का अपने मुझ को दिखा दे सपना
पैरो बना के उनका या रब बना ले अपना
फैलाऊँ दीन तेरा रहती है मेरी कोशिश
तक़रीर से, तहरीर से, जारी है मेरी कोशिश
तेरा करम है या रब जो चल रही है कोशिश
देखूं नबी को तेरे रहती है यह भी कोशिश
या रब नबी का अपने मुझ को दिखा दे सपना
पैरो बना के उन का या रब बना ले अपना

या रब मिलूं मैं जिससे अपना वह मुझ को समझे
हर बात को वह मेरी अपनी ही बात समझे
मुझ से नबी की बातें सुन कर वह माने दिल से
या रब नबी को देखूँ मेरे लिए यह लिख दे
या रब नबी का अपने मुझ को दिखा दे सपना
पैरो बना के उन का या रब बना ले अपना
या रब न मेरे ज़रीअे ईज़ा किसी को पहुँचे
या रब न बात झूठी मेरी ज़ुबां से निकले
या रब न कोई बिदअ़त मेरे सबब से फैले
कल्मा जो मैंने सीखा मेरी ज़ुबां से निकले
प्यारे नबी का या रब मुझ को दिखा दे सपना
पैरो बना के उनका या रब बना ले अपना
या रब नबी से तेरे रखता हूँ मैं मह़ब्बत
आले नबी से या रब रखता हूँ मैं मह़ब्बत
अज़वाज से नबी की माँ वाली है महब्बत
अस्हाब से नबी के रखता हूँ मैं महब्बत
या रब नबी का अपने मुझ को दिखा दे सपना
पैरो बना के उन का या रब बना ले अपना
या रब नबी पे तेरे लाखों सलाम मेरे
आले नबी पे या रब लाखों सलाम मेरे
अज़वाज पे भी उन की लाखों सलाम मेरे
अस्हाब पे सब उन के लाखों सलाम मेरे
या रब नबी का अपने मुझ को दिखा दे सपना
पैरो बना के उनका या रब बना ले अपना

❖❖❖

ईश प्रेमी

—इदारा

ईश प्रेम में लीन रहे
जो ईश प्रेमी होय
सृष्टि से उसकी प्रेम करे
जो ईश प्रेमी होय
नबी मुहम्मद जग के नायक
रब की कृपा उन पर हो
राह नबी की अपनाये
जो ईश प्रेमी होय
जन सेवा भी पूजा है
यदि ईश प्रेम में होय
ईश प्रेम बिन कर्म न अपने
व्यर्थ करे न कोय
वैध जीविका सदा हैं खाते
जो हैं ईश प्रेमी
करे अनाथों की सेवा
जो ईश प्रेमी होय
महा पाप है रक्तपात
और महा पाप है अत्याचार
उग्रवाद से दूर रहे
जो ईश प्रेमी होय
मुशरिक हो या मुन्किरे रब
नार ठिकाना दोनों का
एकेश्वर का करे नमन
जो ईश प्रेमी होय

सामाजिक बुराई लालच

—ए0के0 पाण्डेय

बुराई समाज पर कुछ यूं हावी हुआ।
अच्छे की पहचान ही धूमिल हुआ।।
आज लोग सिर्फ पैसा बनाने में लगे।
नैतिक, अनैतिक भी भूलने लगे।।
नई पीढ़ी के लिए, बड़े लोग आदर्श बनें।
सीख उनकी बुराई, बच्चे कहीं न काल बनें।।
इस जमीन, घर और पैसों के लिए।
हमने अपनों के प्यार को त्याग दिए।।
ये जमीं, घर, आसमाँ है, न किसी का।
इसे छोड़ कर, जाना होगा सभी का।।
रह जायेगें यहाँ पर, आपके कार्य व विचार।
इसलिए दोस्तों त्याग, लालच, आओ करें सुधार।।
आने वाली पीढ़ियाँ हमको करेंगी याद।
हम सबने रोका था, समाज होने से बर्बाद।।

पेशावर के दर्द

स्वार्थ में और सनक में, लोग पागल हुए हैं,
उन्हें मासूमों की चीखें, भी न रोक सकें।
ऐ दोस्तों ये माँ की, आखिरी मातम है,
अब मनुष्य के रूप में, जानवर कहीं पल न सकें।

उर्दू सीखिये —इदारा

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

शोशों के परिचय के पश्चात अब लफ्जों (शब्दों) तथा जुमलों (वाक्यों) का उल्लेख होगा परन्तु उससे पहले इस अरबी वाक्य के विषय में कुछ महत्वपूर्ण ज्ञान देना अनिवार्य है।

अर्थ– इस अरबी वाक्य का अर्थ है "मैं अल्लाह (ईश्वर) के नाम से आरम्भ करता हूँ। जो बड़ा दयालू, महा कृपालू है"। उर्दू भाषी विशेष कर मुसलमान हर कार्य से पहले इस का पढ़ना तथा लेखों में पहले इसका लिखना आवश्यक जानते हैं।

अरबी भाषा के शब्दों में कुछ अक्षरों का लिखना तो आवश्यक होता है परन्तु पढ़ने तथा बोलने में उनका उच्चारण नहीं होता, चूंकि उर्दू में ऐसे बहुत से शब्द प्रयोग होते हैं। अतः उनका वर्णन आवश्यक है। अरबी के संज्ञा اسم दो प्रकार के होते हैं, कुछ के आरम्भ में ال(अल) होता है तथा कुछ के अंत में तन्वीन होती है यहां ال(अल) के विषय में आवश्यक बातें बताना हैं परन्तु तन्वीन का वर्णन आ गया है तो उसका परिचय देना भी उचित होगा। तन्वीन अक्षर पर दो ज़बर, दो ज़ेर तथा दो पेश लगाने को कहते हैं, जिस अक्षर पर दो ज़बर हो पढ़ने में उस पर एक ज़बर के साथ ن(नून) बढ़ा कर पढ़ते हैं, जैसे بً (बन) परन्तु जिस अक्षर पर दो ज़बर हों लिखने में उसके अंत में ا (अलिफ) बढ़ाते हैं जैसे جَوَابًا (जवाबन) لَازِمًا(लाजिमन) इसी प्रकार जिस अक्षर के नीचे दो ज़ेर होती है उसको एक ज़ेर के साथ ن(नून) बढ़ा कर पढ़ते हैं जैसे تٍ (तिन) और यदि अक्षर पर दो पेश हों तो पढ़ने में अक्षर पर एक पेश के साथ ن(नून) बढ़ा कर पढ़ते हैं जैसे تٌ (तुन)।

जिन इस्मों संज्ञाओं के आरम्भ में ال (अल) होता है अरबी भाषा के नियमानुसार पढ़ने में कभी ا (अलिफ) और कभी ال (अल) का उच्चारण नहीं होता।

जारी.....

अंतर्राष्ट्रीय समाचार

—डॉ0 मुईद अशरफ़ नदवी

पाकिस्तान आठवां सबसे खतरनाक मुल्क-

पाकिस्तान दुनिया के सबसे खतरनाक देशों की सूची में आठवें स्थान पर है। इस मामले में वह पांच महीने से आठवें से नौवें स्थान पर बना हुआ है जब कि इराक विश्व का सबसे खतरनाक मुल्क है। इस सूची में वह पांच महीने से पहले स्थान पर कायम है। अफगानिस्तान चौथे स्थान पर है और पांच माह में वह चौथें से छठे स्थान के बीच कायम रहा है। यह वैश्विक रैंकिंग सूची हर महीने तैयार की जाती है। इसे अमेरिकी संस्था इंटेलसेंटर तैयार करती है।

पाकिस्तान आठवें-नौवें के बीच- पिछले कुछ महीनों की जारी सूची पर गौर फरमाने से साफ है कि पाकिस्तान खतरनाक देशों की सूची में आठवें—नौवें स्थान पर बना हुआ है।

दस सबसे खतरनाक देश-

रैंक देश	सीटी आई स्कोर	कितनी हिंसा (कंट्री थ्रेट इंडेक्स)
1. इराक	576	17.39%
2. नाइजीरिया	458	13.82%
3. सोमालिया	336	10.14%
4. अफगानिस्तान	309	9.33%
5. यमन	290	8.75%
6. सीरिया	233	7.03%
7. लीबिया	166	5.01%
8. पाकिस्तान	162	4.89%
9. मिस्र	95	2.97%
10. केन्या	86	2.60%

रामलला का तिरपाल फिर हो गया जीर्ण-शीर्ण- राम जन्मभूमि के अधिग्रहीत परिसर में स्थित मेक शिफ्ट स्ट्रक्चर पर लगाया गया वाटर प्रूफ तिरपाल को बदलने के लिए सुप्रीम कोर्ट की अनुमति लेनी पड़ेगी। कोर्ट की अनुमति ले पाना आसान नहीं है। इसी के चलते पक्षकारों को मानाने की कोशिश हुई लेकिन बात नहीं बनी।

हाई कोर्ट के निर्देशानुसार को पर्यवेक्षकों की मौजूदगी में एएसआई की टीम अधिग्रहीत परिसर में निरीक्षण करने पहुंची थी। इस दौरान हिन्दू व मुस्लिम पत्रकार भी मौजूद थे। सभी ने मेक शिफ्ट स्ट्रक्चर पर लगाए तिरपाल की जांच की तो पता चला कि वह मरम्मत योग्य भी नहीं रह गया है। जबकि सुप्रीम कोर्ट के आदेश से रामलला के टेण्ट का जीर्ण—शीर्ण तिरपाल बीते करीब पांच माह पहले ही बदल गया है। हालांकि कोर्ट का आदेश फरवरी 2014 में हुआ था लेकिन आदेश की सतयापित प्रतिलिपि आदेश के दिनांक से कई माह बाद प्राप्त हुई। इसी से तिरपाल बदलने में खासा विलम्ब हुआ।

साधुओं के लिए भी हो आदर्श आचार संहिता-

योगगुरू बाबा रामदेव ने साधुओं पर उठ रहे सवालों पर कहा कि उनके लिए भी एक आचार संहिता होनी चाहिए। आसाराम पर लगे आरोप पर

शेष पृष्ठ .....32.... पर